भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

जयपुर पंचकल्याणक 2009 में नव प्रतिष्ठित रत्न, स्वर्ण, रजत जिन बिम्ब

वीर निर्वाण संवत् - 2535

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष वि.सं. 2066 जून 2009

वर्ष : तृतीय

अंक : अष्टम

मूल्य : 10/-

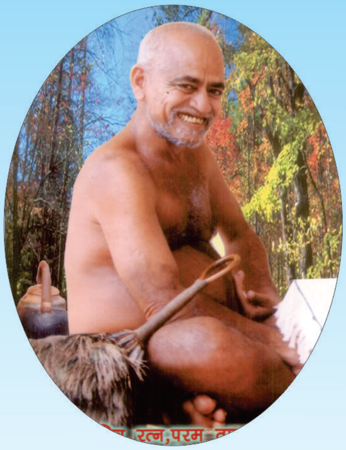

विद्या वाणी

''अष्टमी तथा चतुर्दशी जैन परम्परा में ऐसे शाश्वत पर्व माने गये है जिनका संबंध प्रकृति, तत्व, विज्ञान और सौरमण्डल से है। यही वजह है कि इन दिनों में गृहस्थ और साधुओं को तन, मन और चेतन को स्वस्थ्य साम्य बनाये रखने के लिये उपवास आदि तपों के विधान बनाये गये हैं''

''जयपुर पंचकल्याण महोत्सव-2009 झलकिया''

असली रत्नों की वर्षा करने को जाते हुए श्री सुनील

दि. जैन मंदिर पापलियान की नवीन वेदियों पर विराजित नवप्रतिष्ठित रत्न, स्वर्ण, रजत जिन बिम्ब।

मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भरत (सुनीलजी) एवं बाहुबली (राजेशजी)

पंचकल्याण में पधारे श्री महेश जोशी, सांसद, जयपुर का सम्मान

भरत एवं बाहुबली राजा आदिकुमार के दरबार में

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज।

● *परामर्शदाता* ●
प्रोफेसर एल.सी. जैन
दीक्षा ज्वेलर्स के ऊपर, सराफा, जबलपुर
मोबा.: 94253 86179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9829070038

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंधक सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन
प्राध्यापक, शास. महारानी लक्ष्मीबाई
कन्या स्नातकोत्तर महा., भोपाल
मो.: 0755-2577882, 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश'
नेहरू चौक, गली नं. 4, गंजबासौदा (विदिशा) म.प्र.

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
एमआईजी 8/4, गीतांजलि काम्पलेक्स
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2673820, 94256 01161

● *सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
परम संरक्षक	:	21,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक **भाव विज्ञान**
(BHAV VIGYAN)

तृतीय वर्ष
अंक अष्टम

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. **सम्पादकीय** — श्रीपाल जैन 'दिवा' — 2
2. **संसार से निज ध्यान की ओर** — मुनि आर्जवसागर — 4
3. **श्रेणी आरोहण एवं कर्म निजरा.........** — प्रो. एल.सी. जैन — 8
4. **अनुपम कृति तीर्थोदय काव्य** — डॉ. श्रीमती अल्पना जैन — 15
5. **सम्यक ध्यान शतक** — मुनि आर्जवसागर — 18
6. **महाश्रमण की जीवन यात्रा महाकाव्य** — श्रीपाल जैन 'दिवा' — 20
7. **जैन चित्रकला की वैज्ञानिकता** — डॉ. रोली व्यवहार जर्मनी — 21
8. **आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण** — डॉ. अजित जैन — 27
9. **समाचार** — 29

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

शांति के सूत्र

– श्री पाल जैन 'दिवा'

भगवान महावीर के समय में चारों ओर पशुबलि का बोलबाला था। 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' के हिंसक उद्घोष की गूँज थी। यज्ञों की हिंसक परम्परा में पशुओं की बलि दी जाती थी। चारों ओर हिंसा का हाहाकार मचा हुआ था। मांसाहार का प्रचलन ऊँचाई पर था। जिह्वा के स्वाद पर जीवों की जान लेना साथ में मद्यपान कर जश्न मनाना जीवन का अंग बना हुआ था। ऐसे घोर हिंसक परिवेश में भगवान महावीर ने 'जीओ और जीने दो' का सन्देश दिया। इस संदेश के मूल में अहिंसा विराजमान है। अहिंसा भावना प्रधान दर्शन है। किसी का मन दुखाने का भाव मन में आना भी भाव हिंसा है। भाव हिंसा ही हिंसा-हत्या की मूल है। जिसका जलजला सम्पूर्ण विश्व में चारों ओर देखा जा रहा है। आतंकवाद ने निर्दोष मानवता पर अपना पंजा तीव्र गति से कसना प्रारम्भ कर दिया है। जीवन में 'अभय' की स्थित का क्षरण पल-पल हो रहा है। मनुष्य निश्‍िचत होकर दिन में यात्रा नहीं कर सकता न रात्रि में चेन से सो सकता है। संसार के अनेक देश एक दूसरे पर आक्रमण कर हिंसा-हत्या की विभीषिका से अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं। मूक पशुओं की जान पर आ बनी है। उनकी हत्या करना/बलि (कुर्बानी) देकर उनका मांस भक्षण करना ये राक्षसी कार्यों का बोल-बाला बढ़ता जा रहा है। सुनियोजित ढंग से हिंसक योजनान्तर्गत यांत्रिक कत्ल खानों की निर्लज्जता के साथ स्थापना हो रही है जहाँ लाखों पशु प्रतिदिन मौत के घाट उतारे जा रहे हैं। उनका कोई पुरसाने हाल नहीं है। जब सरकारें ही हिंसा-हत्या को संरक्षण दे रही हैं तो इस पर रोक कैसे लगेगी। यह अत्यंत विचारणीय ज्वलन्त समस्या है। मुर्गी पालन केन्द्र नाम देकर अंडे और चूजों को मारने का निर्दयी ताण्डव हो रहा है। इनके नाम मुर्गीपालन नहीं मुर्गी मारण केन्द्र होना चाहिए । 'पालन' शब्द में अहिंसा विराजमान है। परन्तु हिंसक वृत्ति ने उसमें भी अतिक्रमण कर अपना स्थान बनाकर घोर मायाचारी की है। टी.वी. पर विज्ञापन में परदादा के मुँह से कहलवाया जा रहा है कि गर्मी में अंडे नहीं खाओगे तो ताकत कहाँ से प्राप्त करोगे इसलिए गर्मी हो या सर्दी रोज खाओ अंडे। अण्डा संस्कृति ने तीव्रगति से अपने पैर पसारना शुरू कर दिया है। हमारे बच्चे भी अण्डे के विज्ञापन देखकर उसका मुखड़ा गीत गाने लगेंगे।

हमारा आहार दर्शन भटक रहा है। आहार का भटकना ही विचारों का भटकना है। आहार की शुद्धता पर ही विचारों की शुद्धता निर्भर करती है विचारों की अशुद्धता के सद्भाव में मनुष्य जीवन से करुणा का क्षरण होता है। क्षमा का अभाव होता है। क्रोध-कलह, मान-माया कषायों का बोल-बाला होने लगता है। समाज में देश में विश्व में अशान्ति ऊँचाई प्राप्त करती है । इन सबका उपचार महावीर के मूल मंत्र जीओ और जीने दो में है। इस मूलमंत्र को संयुक्त राष्ट्र संघ को अपनाना चाहिए। जीओ और जीने दो को

अपने लोगो में स्थान देना चाहिए। यह प्रयास धर्मनिरपेक्ष भाव से भारत सरकार को करना चाहिए। साथ ही सम्पूर्ण विश्व में हर देश में महावीर जयंती कार्यक्रम की आयोजना बननी चाहिए। जिससे महावीर की वाणी सबका कल्याण कर सके। संयुक्त राष्ट्र संघ महावीर जयंती मनावे और अहिंसा का संदेश हर देश को अपने मंच से देवे। मन मस्तिष्क से हिंसा हत्या एवं युद्ध के विचारों को निकाल फेंके। विचारों में अहिंसा के बीज बोये जावें तो ही हिंसा-हत्या के हाहाकार से मुक्ति मिल सकती है। अन्यथा हिंसा का रथ निर्बाध गति से दौड़ता ही रहेगा और सम्पूर्ण विश्व देखता ही रहेगा। एक लादेन पूरे विश्व का हिंसा के बल पर मुँह चिढ़ाता रहेगा। मानवता को महावीर की महानता और अहिंसा का लाभ तभी मिलेगा जब हम महावीर को धर्म निरपेक्ष भाव से/समर्पण भाव से विश्व के समक्ष रखें।

अतः महावीर जयंती महापर्व मने पर दुनिया दिल दिमाग से उसे सुने और अहिंसा को स्वयं चुने तभी विश्व शांति के कपोत अभय हो कर उड़ सकेगें। नहीं तो उन पर हिंसा की गिलोल चलती रहेगी।

आहार विधि ज्ञान का महापर्व : अक्षय तृतीया

जैन जगत में अक्षय तृतीया एक विशेष महान पर्व के रूप में जाना जाता है। भगवान आदिनाथ ने जैनेश्वरी नग्न दिगम्बरी दीक्षा लेने के बाद 6 माह का उपवास किया। साथ में 6000 दीक्षित मुनि भी उपवास पर थे। भगवान आदिनाथ का उत्कृष्ट संघनन तो भूख प्यास को सहन करने में सक्षम था परन्तु शेष मुनियों में से अधिकांश मुनियों का संघनन सक्षम नहीं था। उनका ध्यान कर भगवान आदिनाथ 6 मास बाद आहार के लिये उठे और वन से बस्ती की ओर आये। पर आहार विधि नही मिलने पर वापस वन को लौटे। इस प्रकार 6 माह और बीते अन्त में 6 माह 13 दिन बीत गये तब वैसाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) के दिन प्रथम आहार दाता राजा श्रेयांस को उषाकाल में जातिस्मरण हुआ विधि का ज्ञान हुआ और उन्होंने शुद्धि पूर्वक भगवान आदिनाथ का पड़गाहन किया। मन वचन काय की शुद्धि पूर्वक गन्ने का रस का आहार कराया। अन्य मुनियों ने भी खड़े-खड़े कर पात्र से आहार किया। सम्पूर्ण जन समुदाय आहार विधि के दर्शन कर धन्य हुआ । राजा श्रेयांस प्रथम आहार दाता के रूप में सदैव स्मरण किये जावेंगे। तभी से इस अक्षय तृतीया के महापर्व को मनाया जाता है। यह ऐसा पावन दिवस है कि इस दिन कोई भी मंगल कार्य बिना किसी मुहुर्त के किया जा सकता है। ऐसा शुभ दिवस है यह अक्षय तृतीया। आहारदान की परम्परा के प्रथम दिवस के रूप में सदा याद किया जावेगा।

संसार से निज ध्यान की ओर

मुनि आर्जवसागर

व्यवहार से समूचे विश्व को जानने के लिए और निश्चय से निज आत्मा को जानने के लिए हम ध्यान करें। हमें ध्यान कैसे, कहाँ और किस लिए ध्यान करना है? हम इन सब बातों को जानने के लिए ध्यान की साधना सिखायेंगे। वैसे तो अनादि काल से हम ध्यान कर ही रहे हैं। इस संसार में ऐसा कोई भी जीव नहीं जो ध्यान न करता हो और ऐसा कोई क्षण नहीं है जिसमें ध्यान न चलता हो। चौबीस घंटे ध्यान चल रहा है और हरेक आत्मा के चल रहा है एकेन्द्रिय हो या संज्ञी पञ्चेन्द्रिय हो। बात तो ठीक है क्योंकि ध्यान तो सोलह प्रकार के हैं; तो किसी का आर्त्त या रौद्र ध्यान चल रहा है, और किसी का धर्मध्यान या शुक्लध्यान चल रहा है। सम्यग्दृष्टि बने बिना धर्मध्यान की शुरूआत नहीं होती। निर्ग्रन्थ बने बिना शुक्ल ध्यान शुरू नहीं होता। बाकी आर्त्त, रौद्र ध्यान तो अनादिकाल से चल ही रहे हैं। मैं उस प्रशस्त ध्यान को बताना चाहता हूँ जिसको धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान बोलते हैं। कम-से-कम सर्वप्रथम हम धर्मध्यान की चर्चा करते हैं- क्योंकि आप उसके पात्र हैं, आप भव्य हैं, आप सम्यग्दृष्टि हैं इसलिए आप धर्मध्यान कर सकते हैं। चलते-फिरते भी कर सकते हैं और आसन में भी कर सकते हैं। मैं सब कुछ बताऊँगा। ध्यान करने के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की आवश्यकता होती है, उसमें सब कुछ आयेगा। द्रव्य में क्या आयेगा? शरीर आयेगा, शरीर मात्र नहीं आयेगा आत्मा भी आयेगी। जीव या आत्मा; ध्यान का आधार है। अपने परमात्मा का जब हम ध्यान करते हैं तो वह अपने ध्यान के लिए ध्येय है। तो इस तरह आधार और ध्येय द्रव्य से ध्यान होता है जिसमें जीव एक द्रव्य हुआ, परमात्मा भी द्रव्य हुआ। तीन लोक और तीन लोक में रहने वाले षट् द्रव्यों में जीव भी एक द्रव्य है पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन द्रव्यों के बारे में चिंतन करना भी हमारा ध्यान का विषय है। द्रव्य के साथ शरीर और शरीर में क्या होना चाहिए? स्थिरता, आसन, शरीर निरोगी होना, निरोगता के लिए शुद्ध आहार, आहार शुद्ध कहाँ होता है? चौका में। शुद्धता के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव होना चाहिए। इस तरह प्रथम ध्यान के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और द्रव्य में भी शुद्ध आहार में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कहेंगे। इसके अलावा अपने लिए इस द्रव्य में और भी चीजें चाहिए। द्रव्य में मात्र यह शरीर ही होता है ऐसा नहीं, शरीर के साथ और भी कई सामग्रियाँ आपेक्षित होती हैं। आसन है, आहार है और संहनन भी चाहिए। अगर उत्कृष्ट ध्यान करना हो या जो मोक्ष के लिए जो ध्यान होता है, उसके लिए उत्तम संहनन चाहिए। उत्तम संहनन में वज्रवृषभनाराच संहनन चाहिए क्योंकि इस संहनन से ही मोक्ष होता है। आज पञ्चम् काल में उस उत्तम संहनन का अभाव है। वज्रवृषभनाराच संहनन, वज्र नाराच संहनन, नाराच संहनन ये तीन नहीं हैं। कीलक, अर्द्ध नाराच और असंप्राप्तासृपाटिका संहनन ये तीन पाये जाते हैं। संहनन भी ध्यान में सहायक एक द्रव्य है। फिर द्रव्य में सामायिक की जो विधि है कि हमें किस रूप में इस शरीर को बिठाना है ध्यान मुद्रा भी एक द्रव्य है। द्रव्य में सारी सामग्री आती है क्रम से एक एक का वर्णन करेंगे। फिर क्षेत्र; क्षेत्र कैसा होना

चाहिए? एकान्त होना चाहिए। अभी संक्षेप में कह रहा हूँ। काल कौन सा होना चाहिए? सन्ध्या काल होना चाहिए। फिर भाव; भाव में अपना परिणाम विचार, भावना, कैसी होनी चाहिए इन सब का वर्णन करेंगे। उसमें परिणाम या भाव आयेंगे जिसमें सोलह प्रकार के ध्यान वर्णित होंगे। फिर हमें कौन-सा ग्रहण करना, कौन-सा त्याग करना है, परिणाम हमें कैसे सम्हालना है? इन सब बातों को हमें समझना है। फिर मुक्ति पाने के लिए भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की आवश्यकता है। वे कौन से हैं उन्हें भी समझेंगे। ऐसे भिन्न-भिन्न द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावों को हमें समझना आवश्यक है। विषय बहुत गहन है और बहुत सूक्ष्म भी है जिसे समझने हेतु एकाग्रता की आवश्यकता है तो हम पहले समझ रहे थे कि हम हैं कहाँ? बोलिए तो कि कहाँ हैं हम? इसको हम नहीं जान पा रहे हैं अपना परिचय तो बहुत जल्दी से दे देते हैं, लेकिन इस लोक का परिचय तो बताओ कि हम हैं कहाँ? लोक के अन्दर हैं कि लोक के बाहर? या कहीं ऊपर लटक रहे हैं, कि नीचे बैठे हैं, कहाँ है आप? अभी तक उस चिंतन पर नहीं पहुँचे हैं हम।

आज के वैज्ञानिक भी जैन दर्शन की ओर आ रहे हैं पहले कहते थे कि एक सूर्य, एक चाँद है अब कह रहे हैं कि दो सूर्य, दो चाँद हैं। हमारे जैन दर्शन में तो पहले कहा है कि असंख्यात सूर्य, चाँद हैं। लेकिन इस जम्बूद्वीप में मात्र दो सूर्य, दो चाँद हैं, आज जो दिख रहा है वह कल नहीं था। दो दिन रात लगते हैं पूरे जम्बूद्वीप की परिक्रमा लगाने में। एक लाख योजन का यह जम्बूद्वीप है और हम कहाँ पर बैठे हैं? हम जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हैं। भरत क्षेत्र का विस्तार क्या है? $526\frac{6}{19}$ योजन प्रमाण भरत क्षेत्र है। उसमें छः खण्ड हैं उनमें एक आर्यखण्ड है बाकी पाँच म्लेच्छ खण्ड है। आर्यखण्ड बहुत बड़ा है। बीच में पड़ता है। विजयार्ध पर्वत, जो बहुत ऊँचा है। पाँच सौ धनुष वाला (लगभग 3½ हाथ का एक धनुष होता है) चक्रवर्ती उस पर्वत को नहीं लाँघ पाया, अपनी सेना को नहीं ले सका। इतनी ऊँची काया वाला व्यक्ति नहीं जा पाया तो अपने सम्बन्ध में विचार कीजिए। छः महीने तक वहीं रुकना पड़ा। क्योंकि पर्वत में एक गुफा है उस गुफा का दरवाजा खोलते हैं तो उसमें छः महीने तक आग सी निकलती है तो रुकना पड़ता है उसके बाद सेना लेकर उससे प्रवेश करके चक्रवर्ती म्लेच्छ खण्ड जाता है विजय प्राप्त करने के लिए। विजय प्राप्त करनी पड़ती है और चक्ररत्न आगे चलता रहता है। वे लोग सहज रूप से पर्वत को नहीं पार कर पाये तो आज के लोग सहज रूप से पर्वत को कैसे पार करेंगे? आज जो दिख रहे हैं जो विदेश हैं वे विदेश कोई म्लेच्छ खण्ड नहीं हैं। यह World पूरा का पूरा आर्यखण्ड ही है। पहले भरत क्षेत्र की एक ही अर्धचंद्राकार जैसी भूमि थी। बीच में कोई समुद्र नहीं था और पानी भी नहीं था। समुद्र का जल तो जम्बूद्वीप के चारों ओर चूड़ी के आकार में आगम में वर्णित है। आपको अभी-अभी मालूम पड़ा हो कि लंका और भारत के बीच में एक Bridge बना हुआ है, ऊपर से फोटो लिये गये तो उसमें एक रेखा आयी है। जिसको रामसेतु कह करके पुकारा जा रहा है। वह Bridge बना है, पहले ऊपर था फिर समुद्र के अन्दर कैसे चला गया? ये राम के समय बनाया गया था। अभी तमिलनाडु में एक महाबल्लिपुरम् नाम का शहर है। उसके पास एक मैलापुरम् स्थान था वहाँ पर अपना

जैन मंदिर भी था। उसकी प्रतिमा लाकर चित्तामूर मठ में रखी गयी है। यह तमिलनाडु में है । मैंने उसका दर्शन भी किया था वह प्रतिमा नेमिनाथ भगवान की है। हमने पूछा था कि यह प्रतिमा कहाँ से लायी गयी? बताया गया था कि मैलापुरम् से। मैलापुरम् कहाँ गया? समुद्र में डूब गया। जब मंदिर डूब रहा था और मंदिर के अन्दर समुद्र का पानी आ रहा था उसी समय प्रतिमा को निकला लिया और लाकर यहाँ रख दी। मैलापुरम् समुद्र में चला गया। ये सब हम आपको सुना रहे हैं यह वास्तविक घटना है ध्यान रखना। सुना है कि बाम्बे के पास भी समुद्र के अन्दर एक नगर ढूंढ़ा गया है। विदेश की पनडुब्बियों द्वारा ढूंढ़ा गया है। बहुत विशाल नगर है उसके अन्दर पत्थर की बड़ी-बड़ी रचनाएँ हैं और बड़े-बड़े महल हैं। उन्होंने कहा अगर और भी जानना हो तो भारत को खर्चा करना पड़ेगा। हो सकता है वह द्वारिकापुरी हो। गुजरात के पास द्वारिका थी। पहले पत्थर के महल थे वे कहाँ से मिट जायेंगे। भारत ने उनसे कहा भैया! ऊपर जो हैं इसी को नहीं सम्हाल पा रहे हैं तो नीचे क्या करेंगे? ऐसा कह दिया नहीं तो उजागर हो जाता और आप सब लोग देखने भी चले जाते। हम लोग सब जगह जाते हैं, सभी सम्प्रदाय के लोग मिलते हैं तो सब बातें सुनने को, जानने को मिल जाती हैं। एक चीज और है उड़नतस्तरी जो कई बार दिखती है आकाश में। खोज की गयी कि ये क्या चीज है? लेकिन आज तक नहीं जान पाये। वह एक विमान जैसा है। कहते हैं उसके पीछे वैज्ञानिक अपने विमान दौड़ाते है तो अपना विमान ही नष्ट हो जाता है लेकिन उसको नहीं जान पाये आज तक। वैज्ञानिक लोगों ने इतना ही जान लिया कि ये कोई विकसित स्थान पर रहने वाले लोग हैं और ग्रह, उपग्रह पर रहने वाले लोग हैं। हम से बहुत विकसित हैं, अग्रणीय हैं, उन तक पहुँचने के लिए हमें बहुत वर्ष लगेंगे। वे क्या हो सकते हैं आपको क्या मालूम? वे और कोई नहीं; विद्याधर होंगे। क्योंकि ऊपर के देवों के विमान तो नीचे आते नहीं है पञ्चमकाल में। तो विधाधर होंगे। विद्याधर विजयार्ध श्रेणी में रहते हैं जिस विजयार्ध पर्वत को चक्रवर्ती नहीं लाँघ पाया जो 96,000 रूप को धारण करता था तो आज कल के लोग कहाँ से लाँघ पायेंगे। विजयार्थ पर्वत से आज भी केवलज्ञान हो रहा है, मोक्ष हो रहा है। वह भी भरत क्षेत्र में ही है। आप सोचेंगे कैसे? भरत क्षेत्र में जो आर्यखण्ड के लोग रहते हैं; उनको ही मोक्ष होता ऐसा नहीं। विजयार्ध पर्वत में जो विद्याधर लोग रहते थे वे पहले यहाँ आते थे। तीर्थंकर बस यहाँ पर ही रहते थे। वहाँ आज भी विद्याधर है उन विद्याधरों के पास विद्यायें होती हैं। सिद्धि करके उससे वे विदेहक्षेत्र चले जाते हैं और मुनि बनके ऋद्धियाँ धारण करके विजयार्ध पर्वत भी आ जाते हैं और वहाँ से आज भी मोक्ष होता है। क्योंकि म्लेच्छ खण्ड में और विजयार्ध पर्वत में परिवर्तन नहीं है, परिवर्तन होता है आर्यखण्ड में। इसलिए यह विश्व जो है पूरा आर्यखण्ड है। इसके बीच में ऐसा पर्वत ही नहीं है। इसलिए इसको आर्यखण्ड बोलना चाहिए। आप बोलेंगे कि आर्यखण्ड में तो तीर्थंकरों का विहार होता होगा; हाँ जरूर होता होगा इसलिए तो विदेश में अपने मन्दिर पाये जाते हैं नन्दीश्वर द्वीप जैसे रचनाएँ हैं इन्डोनेशिया, थाईलैंड आदि जगह में देखिये आप कैसे-कैसे मन्दिर हैं। आज लन्दन के म्यूजियम में भी अपनी बड़ी-बड़ी प्राचीन दिगम्बर जैन प्राचीन प्रतिमाएँ दो-तीन लाईन में रखी हुई हैं। जिसके

फोटो ग्राफ्स हमने देखे थे। इतनी सुन्दर-सुन्दर प्रतिमाएँ कहाँ से आयी होगी? आज भी वहाँ पर कई मन्दिरों, कई अविशेष हैं। अपने पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ हैं उसको नागबुद्ध बोलकर पूज रहे हैं वे लोग । क्योंकि हमारे लोग नहीं है वहाँ। पहले तीर्थंकरों का विहार वहाँ पर होता था। इन सभी बातों से हमारा श्रद्धान दृढ़ होता है हमारे आचार्य श्री के संघ में तो सब व्रती, मुनि लोग बहुत बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करके आये हैं। एजूकेटेड लोग हैं उन्होंने जाना है कि जैन दर्शन साईंटीफिक है तभी तो इस मार्ग में आये हैं। ऐसे ही नहीं आ गये कि घर में कुछ नहीं है तो दीक्षा ले लो। बड़ी बड़ी सर्विस करने वाले, लाखों की कमाई करने वाले लोग भी उसको छोड़कर के दीक्षित हुये हैं। सब लोग अच्छे परिवार के हैं, धनी परिवार के हैं। कॉलेज पढ़ करके आये हैं और गहराई से जैन दर्शन के मर्म को जाना है तभी तो मुनि बने हैं। अभी आप जिसे विश्व बोल रहे हैं वह विश्व नहीं है। आप कूप मंडूक बनके बोल रहे हैं। वह विश्व नहीं है। विश्व तो बहुत बड़ा है। आज का विश्व तो एक छोटा कुँआ सदृश है। इसमें क्या है? अभी आप सोचेंगे कि बीच में पानी कैसे आ गया ? तीर्थंकर तो समुद्र से तो जाते नहीं होंगे। बीच में पानी नहीं था जो पहले हमने बात कही थी उसको याद करो। कितनी मिट्टी घुलकर समुद्र में जा रही है प्रतिवर्ष, और कितने पर्वत टूट कर पत्थर-रेत बनकर समुद्र में गये हैं। थाली में जिसमें पानी भरा हो मिट्टी डालेंगे तो क्या होगा? पानी ऊपर आयेगा न । ऐसे ही वह समुद्र का पानी जो गोल चूड़ी के आकर में लवण समुद्र है उसका पानी ऊपर आ गया जिसने आर्यखण्ड को भेद कर दिया और यह England यह भारत अलग-अलग दिखने लग गये आपको। यही कारण है यह आर्यखण्ड का विशाल रूप अलग-अलग अनेक देशों के रूप में दिख रहा है। नहीं तो पहले उस समय तो एक ही था।

क्रमशः ......

जैन प्रतिभाओं ने बाजी मारी

अखिल भारतीय स्तर की आई.आई.टी. - जे.ई.ई. एवं ए.आई.ई.ई.ई. परीक्षा 2009 में फरीदाबाद के **श्री नितिन जैन** ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर जैन समाज को गौरवान्वित किया है। भाव विज्ञान पत्रिका परिवार उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना के साथ हार्दिक बधाई देता है। ऐसे सपूत के माता-पिता भी धन्य हैं। बधाई स्वीकारें।

चि. प्रियम बजाज पिता श्री हरीश बजाज, टीकमगढ़ ने कक्षा 12 में गणित तथा विज्ञान के विषयों में मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल से मेरिट में राज्य में तीसरा स्थान प्राप्त करते हुए 95% अंक प्राप्त किये है। इसके लिये भाव विज्ञान परिवार उन्हें हार्दिक बधाई तथा उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभ कामनाएं प्रेषित करता है।

श्रेणी आरोहण एवं कर्म निर्जरा : विज्ञान के आलोक में

प्रो. एल.सी. जैन

भूमिका

जिस विषय पर हम मनन करने जा रहे हैं, उसमें तीन शब्द, ''श्रेणी'', ''कर्म'' और ''विज्ञान'' महारहस्यमय आगम से सम्बन्धित हैं और जिनका इतिहास प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान युगों में अब अत्यंत सहज एवं गहराई से जाना जाने लगा है। तीनों विषयों पर अनेक महर्षियों एवं विद्वानों ने इन कालान्तरों में अपनी कल्पनाओं की उड़ानें भरीं, सूत्र सम्बन्ध प्रस्तुत किये और निजी सिद्धान्त बनाए। प्रकृति की रहस्यमय पुस्तक फिर भी पूरी तरह पढ़ी न जा सकी। इस प्रकृति पुस्तक की भाषा उतनी ही अपरिहार्य है जितनी आज के कम्प्यूटर का जटिल संचालन करने वाली उसके गणित विज्ञान-कला की भाषा।

''श्रेणी आरोहण'' का विज्ञान, ''कर्म निर्जरा'' के विज्ञान से उतना ही सूत्रबद्ध रूप से सम्बन्धित है जितना जीव द्रव्य के भाव से (परिणाम से) पुद्गल द्रव्य के भाव से निमित्त नैमित्तिक रूप से परिणमन करते हुए द्रव्य एवं भाव रूप कर्म को संरचित करते आये हैं। दोनों के परिणमन समीकरणों की गणितमयी सृष्टि करते हैं जिनका दिग्दर्शन हमें तिलोयपण्णत्ती, कषाय पाहुड, षट्खंडागम तथा गोम्मटसार एवं लब्धिसार और उनकी टीकाओं में प्राप्त होता है। गणितीय दर्शन का यह वैशिष्ट्य प्रथमदृष्टया अद्भुत, असंगत एवं असम्बद्ध प्रतीत होता है, किन्तु केवल विशुद्ध मनन से व्यक्ति इन तथ्यों को स्वाभाविक, संगत एवं सुसम्बद्ध रूप प्रकट कर सकता है। इन सूत्रों का स्पष्टीकरण तो हो ही जाता है साथ ही ऐसी घटनाओं की जानकारी उसे हो जाती है कि वह अपने सिद्धान्त को सुदृढ़तर बनाने के लिए आगे भी निकल जाता है। जासूसी कहानी का अंत तो बीच में भी बिना पूर्ण किये निकाला जा सकता है, परन्तु वैज्ञानिक को अव्यवस्थित तथ्यों को एकत्रित करना पड़ता है। उसे अपनी रचनात्मक बुद्धि से उन्हें समझने लायक बनाना पड़ता है ताकि किसी समस्या का आंशिक समाधान भी खोजा जा सके।

द्विविध श्रेणी का स्वरूप

मोह और योग के निमित्त से होने वाले आत्मा के दर्शन और चारित्र गुण की अवस्थाओं को गुणस्थान कहते हैं। इन गुणस्थानों में कोई तो मोह के उदय से होते हैं, कोई मोह के उपशम से होते हैं, कोई मोह के क्षयोपशम से और मोह के क्षय से व कोई मोह की अनपेक्षा से तथा कोई योग के सद्भाव से और कोई योग के अभाव से होता है। इन सभी प्रकारों को निमित्त कहते हैं, अतः कहीं निमित्त सद्भाव रूप है और कहीं निमित्त अभावरूप है।

ये गुणस्थान तो असंख्य हैं, तथापि इनको सहज में समझने के लिए इन परिणमनों को किसी अपेक्षा से समस्त भावों का संग्रह करके १४ प्रकार महर्षि सर्वज्ञ परम्परा से बतलाते हैं। १-मिथ्यात्व, २-सासादन सम्यक्त्व, ३-सम्यग्मिथ्यात्व, ४-अविरत सम्यक्त्व, ५-देशविरत, ६-प्रमत्तविरत, ७-अप्रमत्त विरत, ८-अपूर्वकरण,

९-अनिवृत्तिकरण, १०-सूक्ष्म साम्पराय, ११-उपशांत कषाय, १२-क्षीण कषाय, १३-सयोग केवली, १४-अयोग केवली। इन में से उपशम श्रेणी पर चढ़ने वाले साधुओं के परिणामों का नाम भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म सम्पराय है और क्षपक श्रेणी पर चढ़ने वाले साधुओं के परिणामों के नाम भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म साम्पराय हैं।

द्विविध श्रेणी में, अंतिम उपशमश्रेणी का गुणस्थान ११ वाँ उपशान्त कषाय उल्लेखनीय है। जिनके समस्त कषायें उपशान्त हो चुकी हैं उन्हें उपशान्त कषाय कहते हैं। दर्शन मोह ३ तथा अनन्तानुबन्धी ४ का उपशम तो श्रेणी चढ़ने से ही पूर्व हो गया था, शेष का ९ वें, १० वें में हो गया। इस प्रकार इनके समस्त मोहनीय कर्म का उपशम रहता है। इस गुणस्थान वर्ती जीव का नाम उपशान्त कषाय वीतराग छद्मस्थ है। ये जीव उपशान्त कषाय हैं, वीतराग हैं और छद्म अर्थात् ज्ञानावरण और दर्शनावरण इनमें स्थित हैं, अर्थात केवल ज्ञानी सर्वज्ञ और सर्वदर्शी नहीं हैं।

इन गुणस्थान से पहिले के सभी गणुस्थान सराग छद्मवस्थ कहलाते हैं। कारण कि पूर्वोक्त सब गुणस्थान कषाय के उदय सहित हैं और असर्वज्ञ तथा असर्वदर्शी हैं। इस उपशान्त कषाय गुणस्थान में आत्मा के परिणाम कषाय रहित होने से पूर्ण निर्मल हैं, परन्तु कषायों का उपशम करके ये परिणाम प्राप्त किये गये हैं। अतः उपशमकाल समाप्त होते ही जीव को नीचे दसवें गुणस्थान में गिरना पड़ता है और दसवें से भी 9 वें में गिरता है। इस क्रम में उसे ७ वें, ६ वें गुण स्थान तक तो गिरना ही पड़ता है। आगे की व्यवस्था साधारण है जो चढ़ने वा गिरने दोनों रूप है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशमक गिरता ही रहे तो चौथे गुणस्थान तक ही गिर सकता है। यह फिर क्षपक श्रेणी चढ़कर निर्वाण प्राप्त कर सकता है। यहाँ या द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में यदि मरण हो तो देवगति प्राप्त करता है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के बाद या तो वेदक सम्यक्तव पाकर चौथे, पाँचवे, सातवें में आ सकता है या मिथ्यादृष्टि हो सकता है। इत्यादि विवरण विस्तार से कर्म ग्रंथों में मिलता है।

उपशान्त कषाय गुणस्थान में आना केवल सूक्ष्म साम्पराय उपशमक से ही होता है। यहाँ से जाना भी दसवें गुणस्थान में होता है। यह गुणस्थान चारित्र मोह के उपशम से हुआ है, अतः इसमें औपशमिक भाव है और निमित्त मोह का उपशम है। इसमें जीव समास, उपयोग, आस्रव, योग, अवगाहना, स्थिति या अवधि, परावर्तन काल, बंध प्रकृतियाँ, उदय, सत्त्व आदि के विशेष वर्णन अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन तथा प्रयोग विधि को संकेतित करते हैं।

द्विविध श्रेणी का दूसरा स्वरूप क्षीण कषाय में जाकर अंतरित होता है। यह 12 वाँ गुणस्थान समस्त कषायों के क्षय होने से प्राप्त होता है जहाँ ऐसे निर्मल परिणाम निमित्त होते हैं। इस गुणस्थानवर्ती जीव का नाम क्षीण कषाय वीतराग छद्मस्थ है। कषायों का क्षय दसवें क्षपक गुणस्थान के अंत में हो चुका है अतः यह क्षीण कषाय है, राग द्वेषादि भावों से पृथक है, अत्यंत निर्मल है, किन्तु ज्ञानावरण, दर्शनावरण का क्षय न होने से

छद्मस्थ है, अभी सर्वज्ञ वा सर्वदर्शी नहीं है। इस गुणस्थान से पहिले के सभी अर्थात् ग्यारहों गुणस्थानवर्ती जीव छद्मस्थ हैं। यह गुणस्थान चारित्र मोह के क्षय से प्रकट हुआ है, अतः इसमें क्षायिक भाव है और निमित्त मोह का है, अर्थात् मोह का क्षय है । इस गुणस्थान में बंध केवल सातावेदनीय का है, इसकी स्थिति एक समय की है, अर्थात् इसके ईर्यापथ आस्रव है। विशेष विवरण में किन प्रकृतियों का उदय, अनुदय, सत्त्व, व्युच्छत्ति आदि अनेक प्रकार के विषय समाविष्ट रहते हैं।

क्षीण कषाय वीतराग छद्मस्थ उत्कृष्टोत्कृष्ट अन्तरात्मा ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय-इनका स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त कर देता है, स्थिति बंध व अनुभाग बंध नहीं है। मात्र एक समय स्थितिक ईर्यापथ आस्रव केवल सातावेदनीय प्रकृति का है। इनके प्रवेश के समय से कुछ समय तक तो पृथक्त्व वितर्क वीचार शुक्ल ध्यान होता है। पश्चात् एकत्व वितर्क अवीचार शुक्ल ध्यान में ये जिस योग व जिस जल्प से जिस अर्थ का ज्ञान करते हैं उसी प्रकार ध्यान रहता है। उसके होते ही वह जीव ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ५ अंतराय के उदय, सत्त्व की एक साथ व्युच्छित्ति कर देता है केवलज्ञान उत्पन्न होता है। भाव मन भी नष्ट हो जाता है। क्षेत्र, स्पर्शन, अवधि, अन्तर का विवरण भी मिलता है। इसके अंतिम समय में यह कृतकरणीय कहलाने लगता है।

इस प्रकार यह जीव अपने परिणामों को इस प्रकार सुसंगत करने में पुरुषार्थी हो सकता है कि कर्म प्रकृतियों की उदयादि अवस्थाओं को उपशान्त करते हुए ग्यारहवें गुणस्थान तक आरोहण कर ले अथवा उनका क्षय करते हुए बारहवें गुणस्थान तक आरोहण करता चला जावे।

ध्यानगत विशुद्धि का प्रभाव

धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान होने वाली विशुद्धि किस रूप में सक्षम है यह विषय विशुद्धि के यथातथ्य रूप लक्षण से सम्बन्धित है। एतद् सम्बंधी हमारा एक लेख ''वेदना की गणितीय समतुल्यादि निश्चलताएँ'' भावविज्ञान पत्रिका, जून २००८ में प्रकाशित हुआ है। असाता के बन्ध योग परिणाम को संक्लेश कहते हैं और ज्ञाता के बंध योग्य परिणाम को विशुद्धि कहते हैं। धवल पु. ६/१-९-७,२/९८०/६/ क्रोधमान, माया, लोभ रूप परिणाम विशेष को संक्लेश कहते हैं (कषाय प्रा. ४/३-२२-३०/१५/१३)। जीव के जो परिणाम बाँधे गये अनुभाग सत्कर्म के घात के कारण हैं, उन्हें विशुद्धि स्थान कहते हैं (क.पा./५/४-२२/६१९/३८०/७)। धवलाकार यह भी कहते हैं कि वृद्धिमान व हीयमान स्थिति को संक्लेश व विशुद्धि कहना ठीक नहीं है। वृद्धिमान व टीयमान कषाय को भी संक्लेश, विशुद्धि कहना ठीक नहीं है। जै.सि. को. खंड-3, पृ. ५७६।

करण लब्धि में जो अधःप्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण एवं अनिवृत्तिकरण की प्रक्रियाओं में परिणाम विशुद्धि के गणितीय स्वरूप का विवेचन है जो कर्मों के उपशम, क्षय, क्षयोपशमादिक में कार्यकारी हो जाती है। यहाँ भी विशुद्धि परिणामों का अर्थ वही है जो आत्मा के ऐसे परिणामों रूप हैं जो साता वेदनीय कर्म का बंध करते हैं। जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश में यह प्रकरण विशेष रूप से स्पष्ट किया गया है। एक ओर तो बंध का

कार्य और दूसरी ओर बंध मुक्ति या निर्जरा का कार्य इन दोनों की सम्भाव्यता अस्वाभाविक नहीं है। वस्तुतः, विशुद्धि के उत्तरोत्तर बढ़ते रूपों को और उसके संवादी प्रभावों का लब्धिसारादि ग्रंथों में विशेष विवरण मिलता है। अर्थात् विशुद्धि के परिवर्तन की दर और क्रम गणितीय रूप लिये रहते हैं, परिवर्तन की दर में भी परिवर्तन होता है, जिसकी दर किसी शक्ति के प्रयोग को सामने लाकर उसके फल का निरूपण करते हैं। शक्ति निर्जरा रूप में संवादी वा फलित होती है।

विशुद्धि के प्रकरण में ध्यान गत शब्द का लाना भी एक और विलक्षणता का स्वरूप सामने लाता है। बारह प्रकार के तप निर्जरा में निमित्त होते हैं जिनमें एक ध्यान भी है। धवलाकार (धवल पुस्तक १३, पृ. ६४ आदि) के अनुसार उत्तम संहनन वाले का एकाग्र होकर चिन्ता का निरोध करना ध्यान नामक तप है। एक प्राचीन गाथा उद्धत है - ''जो परिणामों की स्थिरता होती है उस का नाम ध्यान है और जो चित्तका एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में चलायमान होता है वह या तो भावना है या अनुप्रेक्षा है या चिन्ता है।'' (गाथा १२) आगे यह भी बतलाया है, '' जो उत्तम संहनन वाला, निसर्ग से बलशाली, निसर्ग से शूर, चौदह पूर्वो को धारण करने वाला या नौ दस पूर्वो को धारण करने वाला होता है, वह ध्याता है, क्योंकि इतना ज्ञान हुए बिना जिसने भी पदार्थो को भले प्रकार नहीं जाना है उसके ध्यान की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यहाँ ज्ञान को आधार भी बनाया गया है। वह ध्याता सम्यग्दृष्टिः समस्त बहिरंग और अंतरंग परिग्रह का त्यागी, स्वाभाविक रुचि वाला आदि लक्षणों वाला भी होना आवश्यक है। स्तोक ज्ञान से क्षपक श्रेणि और उपशम श्रेणि के अयोग्य धर्म ध्यान ही होता है। अंततः इंद्रियों को विषयों से हटाकर तथा मन को भी विषयों से दूर कर समाधि धारण कर मन को आत्मा में लगाने वाला भी उस ध्यान का स्वामी होता है।

ऐसे ध्यानगत विशुद्धि का प्रभाव या फल क्या होता है, यह विस्तार से प्रत्येक प्रकार के धर्म व शुक्ल ध्यान के अनुसार अलग-अलग रूप में वर्णित है। सभी में अपने-अपने प्रकार की आत्मा स्थिरताएँ विभिन्न प्रकार की होती हुई क्रम से अलग-अलग प्रकार की कर्म प्रकृतियों का संहार करने में प्रयुक्त होती हैं। उन विशुद्धि रूप परिणामों में क्रम अलग-अलग होने के कारण ध्याता अलग-अलग प्रकार की उच्च, उच्चतर स्थिरताओं से गुजरता हुआ अंतिम सिद्ध अवस्था की स्थिरता को उपलब्ध करता है। स्थिरता तो एक ही है, पर उनके कार्य अलग-अलग होने से उसके भेद हो जाते हैं। धर्म का शुक्ल ध्यान में सकषाय और अकषाय रूप तथा अचिरकाल और चिरकाल अवस्थित रूप भेदों को दर्शाता है।

धर्म ध्यान की विशुद्धि के प्रभाव से सम्यग्दृष्टि अक्षपक जीवों को तथा पंचम गुणस्थान में गुण श्रेणी निर्जरा करने वाले जीवों को देवपर्याय सम्बन्धी विपुल सुख मिलता है । गुण श्रेणि में कर्मों की निर्जरा होती है। क्षपक जीवों को भी असंख्यात गुण श्रेणि रूप से कर्म प्रदेशों की निर्जरा होती है और शुभ कर्मों के उत्कृष्ट अनुभाग का होना उसका फल होता है। दो प्राचीन गाथाएँ भी हैं जिनके अनुवाद ये हैं-

उत्कृष्ट धर्मध्यान के शुभ आस्रव, संवर, निर्जरा और देवों का सुख, ये शुभानुबंधी विपुल फल होते हैं।।५६।। अथवा जैसे मेघ पटल पवन से ताड़ित होकर क्षण मात्र में विलीन हो जाते हैं वैसे ही ध्यान रूपी पवन

से उपहत होकर कर्म-मेघ भी विलीन हो जाते हैं।।५७।।

जिन मत में क्षमा, मार्दव, आर्जव को मुक्ति के प्रधान आलम्बन कहे गये हैं, जिन आलम्बनों का सहारा लेकर साधु शुक्ल ध्यान पर आरोहरण करते हैं। अट्ठाईस प्रकार के मोहनीय कर्म का क्षय होना पृथक्त्ववितर्क वीचार नामक शुक्ल ध्यान का फल है, किन्तु मोह का सर्वोपशम करना धर्मध्यान का फल है, क्योंकि कषाय सहित धर्म्म ध्यानी के सूक्ष्मसाम्पराय गुण स्थान के अन्तिम समय में मोहनीय कर्म की सर्वोपशमता देखी जाती है। एकत्व वितर्क-अवीचार ध्यान का फल तीन घाति कर्मों का निर्मूल विनाश करना है। परन्तु मोहनीय का उपशम करना धर्म ध्यान का फल है और क्षय करना शुक्ल ध्यान का फल है क्योंकि सूक्ष्मसाम्पराय गुण स्थान के अन्तिम समय में उसका विनाश देखा जाता है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण शंका उपस्थित की गई है, ''मोहनीय कर्म का उपशम करना यदि धर्मध्यान का फल है तो इसी से मोहनीय का क्षय नहीं हो सकता, क्योंकि एक कारण से दो कार्यों की उत्पत्ति मानने में विरोध आता है। समाधान'' नहीं, क्योंकि धर्म ध्यान अनेक प्रकार का है, अतः उससे अनेक प्रकार के कार्यों की उत्पत्ति मानने में कोई विरोध नहीं होता। अतः कोई भव्य असंयत भी धर्मध्यान के बल दर्शन मोहनीय की क्षपणा कर क्षायिक सम्यग्दृष्टि बन जाता का यह अविरोध है। यहीं विशुद्धि के कार्यों के सम्बन्ध में भी समाधान बैठाया जा सकता है। तीसरे शुक्ल ध्यान के फलस्वरूप योग का निरोध होता है तथा चौथा शुक्ल ध्यान अघाति चतुष्क का विनाश करता है। योग का निरोध होने पर शेष कर्मों की स्थिति आयुकर्म के समान अंतर्मुहूर्त होती है। तदनन्तर समय में वह शैलेषी अवस्था को प्राप्त करता है, तथा समुच्छिन्नक्रिय अनिवृत्ति शुक्ल ध्यान को ध्याता है। धवलाकार कहते हैं, जिसने ज्ञान का निरंतर अभ्यास किया है वह पुरुष ही मनोनिग्रह और विशुद्धि को प्राप्त होता है, क्योंकि जिसने ज्ञान गुण के बल से सारभूत वस्तु को जान लिया है वही निश्चल मति हो ध्यान करता है।

कर्म निर्जरा का गणितीय आधार -

कर्म सिद्धान्त के सात तत्वों में एक ''निर्जरा'' तत्व है जो कर्म की बन्ध अवस्था को निर्जरित अवस्था में ले जाने का विवेचन करता है। जीव में किन परिणामों के फल स्वरूप कर्म की प्रकृति कितने प्रदेशों को लेकर, कितनी स्थिति के लिए और कितना फलदान शक्ति को लेकर बंध को प्राप्त हुई है यह घटना मात्र नियमों का संग्रह और असम्बद्ध तथ्यों की सूची मात्र प्रकाशित नहीं करती है। वह कोई रहस्यमय विज्ञान है जो स्वतंत्रता पूर्वक आविष्कृत विचारों और धारणाओं द्वारा निर्मित मानव मन की सृष्टि है। कर्म सिद्धान्त वास्तविकता का चित्र खींचने और इंद्रियानुभूतियों के विस्तृत जगत से उसका सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करता है। जीव में जो परिणाम कर्म की उदयादि अवस्था के निमित्त से होते हैं, तथा उसके परिणामों में कर्म को पुनः आस्रवित का बंध करने का जो निमित्त, नैमित्तिक उपादान आदि पूर्वक सम्बन्ध जन्म और पुनर्जन्म के अन्तहीन चक्र को चलाने में क्रिया प्रतिक्रिया रूप से दृष्टिगत होते हैं उन्हें गणितीय

आधार लेकर स्पष्ट किया जाता है।

प्रत्येक सिद्धान्त के निर्माण में आधारभूत विचारों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कर्म सिद्धान्त के ग्रंथ जटिल गणितीय सूत्रों से भरे हैं। किन्तु प्रत्येक सिद्धान्त का प्रारंभ विचारों और कल्पनाओं से होता है, सूत्रों से नहीं। विचारों को आगे चलकर प्रदेशात्मक एवं अनुभागात्मक सिद्धान्त के गणितीय रूप को धारण करना पड़ता है जिससे कि उनकी तुलना प्रयोग से की जा सके।

आज दिन प्रतिदिन नयी समस्याएँ नये आयाम लेकर आ रही हैं । सुलझती हुई समस्याओं की संगति बिना सुलझी समस्याओं से करने से नये विचारों के निर्देशन के द्वारा हमारी नई समस्याओं पर नया प्रकाश पड़ सकता है। ऐसी ऊपरी तुलना ढूँढ़ लेना सरल है जो वास्तव में कुछ भी प्रकट नहीं कर सकती। किन्तु बाहरी भेदों के तल के भीतर छिपे हुए कुछ महत्वपूर्ण सामान्य लक्षणों को ढूँढ निकालना और इसके आधार पर एक नये सफल सिद्धान्त का निर्माण करना महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य है। हिंसा में रत, कर्म काण्डी सिद्धान्त से जब अहिंसावादी कर्म सिद्धान्त की पारस्परिक सुसंगत तुलना की जाये तो ऐसे गहन, अगम्य सिद्धान्त तक पहुँचा जा सकता है जो आज की आतंकित करने वाली घटनाओं की रोक को क्रियान्वित करने में सहायक सिद्ध हो सके। नरक और स्वर्ग के तथ्य सभी प्रकार के धर्मों में उपलब्ध हैं, किन्तु गणितीय कर्म सिद्धान्त का नया रूप उलझी समस्याओं को समाधानित कर सकता है।

वह समय निकल गया जब समय की मनोवैज्ञानिक आत्मगत अनुभूति हमें अपने ऊपर बड़े प्रभावों को क्रमबद्ध करने में तथा यह कहने में समर्थ बनाती थी कि एक घटना दूसरी के पहले हुई है। इसी प्रकार घड़ी के प्रयोग द्वारा समय के प्रत्येक क्षण को एक संख्या से सम्बद्ध कर दिया गया, समय को एक विमावाला सांतत्यक मान लिया गया। यूक्लिदीय तथा अयूक्लिदीय ज्यामिति की धारणाएँ और तीन विमावा ले सांतत्यक रूप में आकाश को माना जाने लगा जो सभी मानव मन की रचनाएँ थी। आपेक्षिकता सिद्धान्त द्वारा निरपेक्ष समय और जड़त्वीय निर्देशांक पद्धति का परित्याग कर दिया गया। एक विभावाला समय और तीन विमावाला आकाश सांतत्यक अब सभी घटनाओं की पृष्ठभूमि नहीं रहा, अब उसके स्थान पर चार विमाओं वाला दिक्काल सांतत्यक घटनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में माना जाने लगा। यह आइंस्टाइन की खोज का परिणाम हुआ।

इसी प्रकार प्राचीन धारणाओं में कर्म सिद्धान्त का अविर्भाव एक ऐसी गणित की पृष्ठभूमि में लाया गया जो लोकोत्तर गणित के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके द्वारा कर्म निर्जरित करने सम्बन्धी सिद्धान्त को परिपुष्ट किया गया ताकि असाता को नष्ट तथा साता को उत्पन्न करने के साधनों पर गहराई से विचार हो सके। आधुनिक विज्ञान के विविध भेदों को एक सूत्र द्वारा स्पष्ट करने हेतु अनेक गणितीय पृष्ठभूमियाँ विकसित की गयी हैं। इसी प्रकार कर्म सिद्धान्त जो अभी तक जिस गणितीय पृष्ठभूमि पर फलनीय था, उसे अब बिना स्वरूप बदले नयी गणितीय पृष्ठभूमि देने पर विलक्षण रहस्य खोले जा सकते हैं। अगले पृष्ठ पर परिशिष्ट दृष्टव्य है।

परिशिष्ट

नाम	जीव	पुद्गल	धर्म	अधर्म	लोकाकाश	मुख्यकाल	व्यवहार काल	अलोकाकाश	
द्रव्यमान	१६	१६ ख	१	१	१	–	१६ ख ख	१६ ख ख ख	अ–अजीतकाल
क्षेत्रमान	–ख	– ख ख	–	–	–	–	– ख ख ख	– ख ख ख ख	ओ–अवधिज्ञान
कालमान	अ ख	अ ख ख	क व	क व	क व	क व	अ ख ख ख	अ ख ख ख ख	
भावमान	के	के	ओ	ओ	ओ	ओ	के	के	
	ख ख ख ख	ख ख ख	व	व	व	व	ख ख	ख	

नाम	जीव	अजीव	जीव पुण्य	अजीव पुण्य	जीव पाप	अजीव पाप	आस्रव	संवर	निर्जरा	बंध	मोक्ष
द्रव्यमान	१६	३ – १६ ख	१ ?? प व ४ व व ४ व व	स व १२–?	१३–	स व १२–??? ओ प ८५ व	स व	स व	स व १२–६४ ओ प ८५ व	स व	स व १२–
क्षेत्रमान	– ख ख	– ख ख ख	२ व	– ख ??	– ख ख –	– ख ? ? ?	– ख	– ख	– ख	– ख	– खे
कालमान	अ ख	अ ख ख	क व	क ख –	क ख	क ख	क ख	क ख	क ख	क ख	क ख
भावमान	के ख ख	के ख	ओ व	के ख ख ख	के – ख ख	के ख ख ख	के ख ३	के ख ३	के ख ३	के ख ३	के ख ३

अर्थ संदृष्टिमय गणितीय आधार लिये नव पदार्थ विषयक सारणी। ये मान, सम्बन्धों की सीमाएँ अल्पबहुत्व द्वारा निर्धारित करते हैं इस प्रकार के गणितीय कर्म सिद्धान्त में पूर्वापर विरोध आदि असंगतियों की सम्भावना नहीं रहती है।

इस विशाल सामग्री को समुचित रूप से व्यवस्थित कर वैज्ञानिक सिद्धान्त का स्वरूप देने गुणायतन जैसे संस्थान में करोड़ों रुपयों का निवेश भी कम है। बोध के एक शब्द का मूल्य भी रत्नों की ढेरियों द्वारा नहीं दिया जा सकता है।

अनुपम कृति तीर्थोदय काव्य

समीक्षिका-डॉ. श्रीमती अल्पना जैन

गतांक से आगे.........

अभिप्रेत काव्य ग्रन्थ का प्रभाव नावक के तीर से कहीं अधिक गम्भरी प्रभावी एवं मार्मिक है। यह गागर में सागर सम या इससे भी कहीं अधिक बिन्दु में सिन्धुवत् है। मुनि एवं श्रावक दोनों के आचार-विचार का सम्यग्दर्शन की विशिष्टता सहित विवेचन श्रेष्ठता से मंडित है । यथा -

सम्यग्दर्शन नौका में अब, बैठ भवोदधि तरना है।
रत्नत्रय सद्गुण रत्नों से, आत्म खजाना भरना हैं ॥ १८४॥
अणुव्रत धारी पाक्षिक, नैष्ठिक, श्रावक कर्म खपाते हैं।
सल्लेखन को धारण करते, साधक वे बन जाते हैं।।
निर्मल भावों सह वे होते, बाल-सु-पंडित मरण करें।
महाऋद्धि सहदेव सु-पद पा, नरगति पा शिव गमन करें ॥ ३४१॥

जीवन को सुचारु रूप से चलाने हेतु प्राणीमात्र को आहार सर्वोपरि आवश्यकता आहार है। मानवीय जीवन में भी आहार के बिना ज्ञान, ध्यान, तप आदि करना अत्यंत दुष्कर होता है। शारीरिक क्षमात पोषण के लिए आहार आवश्यक है। पूज्य गुरुवर ने 'सर्वजन हिताय' भक्ष्य, अभक्ष्य, सेव्य, अनुपसेव्य, आहारादिक शुद्धि अहिंसा पालन आदि विषयों की सुन्दर काव्यमय व्याख्या कर दिशा बोध दिया है। कवि हृदय ने काव्य में अनुपम शब्दांकन किया है -

दाल भात वा रोटी आदिक, अन्नाहार कहा जाता।
पीने वाला रस आदिक वह, पेयाहार गिना जाता ।।
लड्डू आदि खाद्य कहा, व रबड़ी आदिक लेह्य कहा।
निशि में छोड़ें एक वर्ष में, छह मास उपवास कहा ॥ ३१४॥
आगम में त्रस घात तथा वे, अभक्ष हैं बहुघात कहे।
प्रमादवर्धक अरु अनिष्ट व, अनुपसेव्य ये पांच रहे ॥ ३१६॥
प्रासुक होकर भी जो चीजें, उदर शूल आदिक देवें।
करें हानि वे अनिष्ट होतीं, रुचिकर तो भी ना सेवें ॥ ३१८॥

वैज्ञानिक जगत् में दार्शनिक कवि की लेखनी ने जल गालन विधि का सरल भाषा में सूक्ष्म विवेचन पूर्व संस्कृति की रक्षा सह प्रकृति रूप में वर्णित कर श्रावकोचित विवेक, अहिंसा पालन को अभिप्रेरित किया है। यथा-

किसी पात्र रस्सी द्वारा, जल निकला में छानें वे।
मोटा कपड़ा दुहरा होता, धीरे-धीरे छानें वे ।।
बिना छना जल गिरे न नीचे, योग्य पात्र हो ध्यान रहे।
जीवानी को नीर सतह पर, धीरे छोड़ें ज्ञान रहे ॥ ३२२॥

पूज्य मुनि श्री के करुणामयी हृदय के परम उपकारी करुणावान रश्मियाँ प्रस्फुटित हो काव्य में जीव रक्षा हेतु अहिंसा पालन पर जोर देती हैं, यह नित्य विचारणीय और नित प्रति जीवन के लिये आचरणीय है। पंचाणुव्रत रक्षण के लिये गुणव्रत, शिक्षाव्रतादि बाढ़ रूप में स्पष्ट विवेच्य किये हैं व निरतिचार पूर्वक व्रतों का परिपालन करने की प्रेरणा काव्य में संलक्षित की गयी है। लोक में प्रचलित अनेकशः भ्रांतियों के निरसन का मार्ग बतलाया है, इस हेतु त्रिमूढ़ताएँ सम्यक्त्व की उपलब्धि में बाधक कहीं हैं। आधुनिक संदर्भ में प्रचलित मूढ़ताओं के स्वरूप को बहुत ही सटीक शब्दों में वर्णित किया है। मुनि श्री की भावाभिव्यक्ति लोक मूढ़ता में दृष्टव्य है -

बली समा जो फल को फोड़े, हिंसा का वो पाप भरें।
मृत्यु भोज या भण्डारा से, दीनों को संतप्त करें ।।
बांटे खाद्य वस्तु रात में, जो नव आंग्ल-वर्ष मानें ।
पंचम में मिथ्या सह उपजें, जन्म-दिवस स-हर्ष मानें ॥ ३२॥
धर्म पर्व में फोड़ फटाका, जो असंख्य प्राणी मारें ।
रंग डालकर अनर्थ करते, बांटें पत्ती स्वीकारें ।।
फूलमाल व कदली से भी, देव सजा हिंसा करते ।
मिट्टी पुतले जला, व जल में - डुबा मूढ़ता वे करते ॥ ३३॥

सर्जक साहित्यकार सृजक क्षणों में आध्यात्मिक ऐक्य की चेतना को प्राप्त होता है, वह मानव मात्र की पीड़ा से द्रवीभूत होकर प्रत्येक स्तर पर सृजन करता है, तीर्थोदय काव्य में भी यही भाव प्रतिबिम्बित होता है। वस्तुतः आधुनिक समय भोतिकता पूर्ण है, जिसमें असंयममय जीवन शैली मानवीय जीवन के आकण्ड तक समा चुकी है। ब्रह्मचर्य शील के अभाव में भ्रूण हत्या और गर्भपात जैसी विकृतियाँ भी सुरसा की भाँति मुँह बायें बहुतायत में बढ़ती जा रही हैं। इसी असंयम प्रवृत्ति के निदान हेतु संयममय जीवन एवं ब्रह्मचर्य शील की महत्ता को दर्शाते हुए लिखा है-

सन्तानें गर मोक्षमार्ग में जाएँ धर्म समुन्नत हो।
ना सन्तान अगर चाहे तो, ब्रह्मचर्य में उत्पन्न हो ॥ २५५॥
ना मानव वह विषय वासना, हेतु विवाह रचाता है।
ना सन्तान बढ़े चाहें तो, ब्रह्मचर्य अपनाता है।
नहीं अंग का छेद भेद वह, ब्रह्मचर्य अपनाता है।।
क्योंकि वह ना धर्म मार्ग से, दूर कभी भी जाता है ॥ २५६॥

कामवासना पर विवेक पूर्णता की लगाम का चिन्तन शीलवान बनने की दृष्टि से प्रेरणास्पद है। मानव मात्र के लिये यह सद्प्रेरक कल्याणकारी अनुशीलन है। पंचेन्द्रिय विषयों में अनासक्ति, शील-ब्रह्मचर्य, इसमें बाधक भावों, स्थितियों व निमित्तों की सुन्दर प्रस्तुति काव्य में सदाचारी जीवन जीने की ओर इंगित करती है। तीनों लोगकों में जैनधर्म की महिमा का गुणगान शिक्षाप्रद शैली में वर्णित कर काव्यकार ने कुशलता से निरूपित किया है।

तीन लोक में उत्तम जानो, जैन धर्म विख्यात रहा ।
मूल अहिंसा संदेशों का दीप जले दिन-रात रहा ।।

जीव मात्र में मैत्री होना, जैन धर्म सिखलाता है।
अतः लोक का धर्मी मानव, उसके गुण को गाता है।।

'तीर्थोंदय काव्य' तीर्थंकरों की दिव्य ध्वनि से निःसृत अमृत सिन्धु, चतुर्विध अनुयोगों का सार, रत्नत्रय पालन का काव्य है, हिन्दी का तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला, पुरुषार्थसिद्धयुपाय का अमृत, मूलाचार का पोषक काव्य, व्रतों के अतिचार, व्यतिचार, अनाचार से रक्षा का काव्य, श्रावकाचार के रत्नों की हिन्दी मंजूषा संयम मार्ग का प्रकाश स्तम्भी काव्य, श्रमण-श्रावक दोनों को समान उपयोगी काव्य, षोड़शकारण भावना का काव्य, सम्यक्त्व की प्राप्ति में मार्गदर्शन का काव्य प्रेरक देशना पूर्ण थी वृद्धि से अभिभूषित है।

'तीर्थोदय काव्य' के अवलोकन व पठन करने का सौभाग्य मुझे परम पूज्य मुनिश्री के पावन वर्षायोग २००८ श्री दिगम्बर जैन मंदिर, नया बाजार, ग्वालियर में मिला और अपने मनोभावों को व्यक्त करने का मन बनाया। सुप्रतिष्ठ केवली का निर्वाण क्षेत्र गोपागिरी पर वर्धमान मंदिर जो चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को समर्पित है, यहां अनेकानेक संतों की तप साधनामयी वर्गणाएँ वातारण को सुरम्य बना रही है और यही अनेकों ग्रंथों का सृजन भी हुआ है। अष्टाहिन्का महापर्व का सुअवसर भी पुनीत कर रहा है। ऐसे परम पावन पुनीत स्थल पर हमने अपनी लेखनी चलाकर अपने को धन्य माना है।

वीर प्रभु से मंगल यही भावना है कि चैतन्य की अनुभूति में मुनि श्री ऐसी ही अनुपम कृतियों का सृजन कर स्व-पर कल्याण करते रहें और संसार के भव्य जीवों का मार्ग प्रशस्त करते रहें। यह कृति आबाल, वृद्ध, सुधीजन, विद्वत्जन, मनीषियों आदि सभी के लिये स्वाध्याय योग्य है। जिसे पढ़कर सभी परमात्मा की समीपता को पाने का भाग्योदय प्राप्त कर सकते हैं। पुनः वीर प्रभु से मंगल भावना है कि परम पूज्य मुनिश्री शतायु हों और मोक्षमार्ग पर बढ़ते हुए जिनवाणी के मर्म को जन-जन तक बतलाते रहें। मुनिश्री के पावन पुनीत चरणों में त्रियोग पूर्वक शत्-शत् नमोस्तु करते हुए अत्यंत उपयोगी कृति को भी शत्-शत् नमन् प्रस्तुत है। पूज्य मुनिवर के शब्दों में सार्थक भावना के साथ -

तीर्थोदय से लोक में शांति सुधा हो पूर।
काव्य पढ़ें हम नित्य यह शिव सुख फिर ना दूर ॥ ६९८॥

अन्त में एक बात और लिखना आवश्यक समझा है कि काव्य में प्रारम्भ से अन्त तक अनेकार्थवाची रूप में 'शिव' शब्द का प्रयुक्ति करण है जो विशिष्ट ध्यातव्य है, जिसे जैनागम में परक कल्याण, निर्वाण, अक्षय ज्ञान, सिद्ध, मोक्ष, वीतराग, परमानन्द, सुख आदि अर्थों में आचार्यों ने अभिहित किया है। इन्हीं अर्थों में मुनि श्री ने 'शिव' शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयुक्त किया है।

दिन की ज्योति में गर्व नहीं।
अंधेरी रात का तिरस्कार नहीं।।
आगम ग्रंथ पुराणों की स्मृति से संजोया है।
दिव्य लेखनी से सोतों को जगाया है।।
पूज्य मुनि श्री की अनवरत कलम चलती रहे।
और खुले कंठ से काव्य कृतियाँ सृजती रहें।।

सम्यक् ध्यान शतक

– *मुनि आर्जवसागर*

गतांक से आगे.........

स्पर्शन, रसना रहीं, काम इन्द्रियाँ जान ।
कामजयी के ऊर्ध्व में, वहे ऊर्जा मान ॥ 28 ॥

ममत्व तन का त्याग हो, कायोत्सर्ग महान ।
आर्व नमन साथ हो, निषद्यासह सु-धान ॥ 29 ॥

नेत्र खुले न बंद हो, नाशा दृष्टि सुहाय ।
अधो दाँत फिर ऊर्ध्व की, पंक्ति सौम्य कहाय ॥ 30 ॥

सर्व अक्ष व्यापार को, विराम योगी देत ।
धीरे-धीरे श्वास ले, ध्यान एक कर लेत ॥ 31 ॥

नहीं दृष्टि हो चंचला, आसन विजयी पूर्ण ।
भौतिक साधन दूर सब, प्रकृति साथ सम्पूर्ण ॥ 32 ॥

शुद्ध आत्मा ध्येय है, परमेष्ठी, नव देव ।
निमित्त द्रव्य व तत्त्व भी, अस्तिकाय सदैव ॥ 33 ॥

ध्यान क्षेत्र एकान्त हो, बाधाओं से दूर ।
जंगल, गृह, मंदिर रहे, प्रसन्नता से पूर ॥ 34 ॥

सुबह, मध्य व शाम में, नित्य करें शुभ ध्यान ।
योग सुसुम्ना स्वर चले, परम शांति हो जान ॥ 35 ॥

द्वि, चार व छह घड़ी, सामायिक में ध्यान।
उत्तम, मध्यम व जघन्य, काल तीन पहिचान ॥ 36 ॥

सब जीवों पर साम्य हो, संयम भावन नेक।
आर्त्त, रौद्र का त्याग हो, समता पूर्ण विवेक ॥ 37 ॥

ना राजा ना रंक लख, ना ही सौम्य कुरुप ।
आतम इनसे भिन्न है, यति लखता सम रूप ॥ 38 ॥

इन्द्रिय विषयों में जहाँ, भोग रुचि का त्याग ।
त्रस, थावर का घात तज, तजें जगत से राग ॥ 39 ॥

जहाँ भावना धर्म की, पच्चीस वा सोलह ।
बारह, सप्त व चार भी, त्रि, द्वि, इक शुभ लह ॥ 40 ॥

पंच-पंच अहिंसादिक, व्रत की भावन जान ।
दर्शनविशुद्धि आदि भी, सोलह भावन मान ॥ 41 ॥

अनित्य आदिक भावना, बारह भावन जान ।
शास्त्राभ्यास जिन स्तुति, आदिक सात सु-मान ॥ 42 ॥

मैत्री, प्रमोद, करुणा व माध्यस्थी चउ मान ।
रत्नत्रय, संवेग वै-राग्य दोय सुख जान ॥ 43 ॥

आत्म तत्त्व की भावना, एक भावना नेक ।
शिवसुख की ये भावना, करे आत्म अभिषेक ॥ 44 ॥

अर्तिभाव आर्त्त है, जिसका दु:ख है नाम ।
अशुभ बंध, दुर्गति भजे, बिगड़ें धर्म सु-काम ॥ 45 ॥

जहाँ नष्ट हों इष्ट वे, पदार्थ या हों दूर ।
कहाँ मिलेंगे रोष यह, इष्ट वियोगी पूर ॥ 46 ॥

जहाँ अनिष्ट पदार्थ के, हट जाने का भाव ।
अनिष्ट संयोगी बने, मिलता नहीं स्वभाव ॥ 47 ॥

तन की पीड़ा होय जब, रोगादिक हो मान ।
रोग-भूख आदिक मिटे, पीड़ा चिन्तन ध्यान ॥ 48 ॥

इन्द्रादिक की सम्पदा, इन्द्रिय के वे भोग ।
आगे हमको प्राप्त हों, यही निदान प्रयोग ॥ 49 ॥

प्रथम पांच गुणथान तक, सभी आर्त्त हों ध्यान ।
छठे उस गुणथान में ,बिन निदान त्रि मान ॥ 50 ॥

क्रमश:

‘महाश्रमण की जीवन यात्रा’ महाकाव्य

श्रीपाल जैन दिवा

महाश्रमण आगमज्ञ महाकवि आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज, मुनि की मौन साधना के धनी, उपाध्याय की ज्ञान साधना के महान चिन्तक, प्रखर-गम्भीर देशना के प्रदाता साधक ज्ञान गुरु एवं आचरण के आचार्य, शिष्यों के हित प्रशस्त शास्ता गुरु के गुरु हैं। उनके चरित का अध्ययन करने वाला लेखक-कवि बन जावे तो कोई अचरज की बात नहीं। उनके आचार का सत्संगी पल-पल प्रेरणा प्राप्त करता है लिखने की। इतना भाव विभोर होता है वह सत्संगी कि भक्ति के झरने, झरने लगते है और गीत-कविता झरने लगती हैं। ऐसा ही कुछ भाई सरल जी के साथ हुआ और वे ‘विद्याधर से विद्यासागर’ लिख गये। इनसे भी अधिक भावुक अनघड़ भाई श्री ज्ञानचंद जैन ‘दाऊ’ साबित हुए। वे तो आचार्य भगवन की भक्ति में ऐसे रमे कि भावना के फूल झरते ही गये वे समेट नहीं पाये इतने झरे। जितने समेट पाये उतने ही पाठकों के लिए पर्याप्त नजर आते हैं। पाठक धन्य हो गये।

महाकवि महाश्रमण पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी पर गेय छन्दों में लिखा चरित काव्य महाकाव्य तो है ही वह भक्ति का महासागर है। ऐसा सागर जो तिरने के हित आमंत्रित करता है। अभय दान देता हुआ मोक्ष मार्ग की ओर मोड़ता है। धर्म से जोड़ता है और आत्मा के भव्यत्व की प्राप्तिहित मुनि बनने की सम्यक् प्रेरणा देता है। सम्पूर्ण ग्रंथ 12 चरणों में विभक्त कर महाकाव्य के मानकों का एक मान है। आचार्य श्री नायक से ऊपर महानायक के श्रेष्ठत्व को प्राप्त हैं। उनको महाकाव्य का महानायक बनाना एक समृद्ध परम्परा का भक्तिपूर्ण पालन कहा जाना चाहिए। यद्यपि महानायक आचार्य श्री का चारित्र इतनी उच्च साधना से आपूरित है कि उसे महाकाव्य में बाँधना ‘दाऊ’ तो क्या कोई भी विद्वान महाकवि के भी वश की बात नहीं है। फिर भी ‘दाऊ’ की भक्ति ने पूरा प्रयास किया है। उनका प्रयास स्तुत्य है। प्रेरणादायी हैं। मुद्रण कागज सभी सुरुचि पूर्ण एवं नयनाभिराय है।

महाकाव्य में ग्राम्यत्व दोष के यत्र-तत्र दर्शन होते हैं। वे दोष भी लोक भाषा के गुणों का बखान ही कर रहे हैं। लड़खड़ाते छन्द भक्ति की शक्तिशाली लाठी के सहारे तिरते नजर आते हैं। ये उल्लेख डिठोने के रूप में ही हैं। यह महाकाव्य है भक्ति की सुगन्ध का अपार भण्डार। सबसे बड़ी खुबी है महाकाव्य में मन रमता है भक्ति का रंग चढ़ता ही जाता है। यही ‘दाऊ’ लेखनी की विशेषता है। और आचार्य श्री के उज्जवल-धवल चारित्र एवं ज्ञान का सुप्रभाव है।

ग्रंथ का नाम	:	महाश्रमण की यात्रा
लेखक कवि	:	ज्ञानचन्द जैन ‘दाऊ’ पिड़रुवा वाले, रामपुरा वार्ड, सागर
प्राप्ति स्थान	:	राजेन्द्र कुमार जैन, सुमन महावीर ज्वेलर्स, चकराघाट, सागर स्वतंत्र जैन, रीना आयरन स्टोर्स, कोतवाली के पास, टीकमगढ़ फोन : 07683-283367
मूल्य	:	131/- (पुनः प्रकाशनार्थ)

जैन चित्रकला की वैज्ञानिकता

- डॉ. रोली व्यवहार, जर्मनी

गतांक से आगे.........

जैन चित्रों में भाव के विज्ञान की अभिव्यंजना : भाव मन का विज्ञान है अर्थात् मनोविज्ञान है। चित्र में मनोविज्ञान अंतः मन को प्रदर्शित करता है और गणित विज्ञान बाह्य स्वरूप दर्शाने में सहायक होता है। भाव के विज्ञान को चित्र में प्रदर्शित करने हेतु जैन कलाकारों ने गणित विज्ञान का भी सहारा लिया है। जैन चित्रकला में भाव प्रदर्शन रैखीय तकनीक के द्वारा विभिन्न मुख मुद्राओं एवं शरीर की अन्य मुद्राओं से किया है। जैसे तीर्थंकर भगवान की मुखमुद्रा, आसन मुद्रा, हस्तमुद्रा से शांत भाव प्रदर्शित किये गये हैं। कुछ चित्रों नृत्यांगना को एवं दासियों को त्रिभंग मुद्रा में चित्रित किया गया है जिससे चित्र में अत्यधिक लयात्मकता उत्पन्न हो गई है और उनकी हस्तमुद्रा एवं मुखमुद्रा से हर्ष के भाव प्रदर्शित हो रहे हैं। त्रिभंग मुद्रा में आकृति सीधा एस (S) उल्टा एस (Ƨ) आकार में बनाई जाती है। त्रिभंग मुद्रा का प्रयोग चित्रकला का अनिवार्य और महत्वपूर्ण अंग है। जैन कलाकारों ने उसका भी भरपूर प्रयोग किया है।

वैज्ञानिक यह सिद्ध कर चुके हैं कि जिसके जैसे भाव होते हैं वायुमण्डल में भी उनके कण फैल जाते हैं अतः व्यक्ति के भाव का प्रभाव वायुमण्डल में उपस्थित अन्य जीवों पर भी पड़ता है। तीर्थंकर भगवान जब वन में तपस्या करते है तब सिंह, साँप जैसे हिंसक जीव भी शान्त भाव से उनके समक्ष बैठ जाते हैं। यह भगवान के शांत भाव का ही प्रभाव है। षट्लेश्या में भी भिन्न-भिन्न भाव वाले व्यक्तियों का अंकन किया गया है। भावों पर आधारित बारह भावनाओं का चित्रांकन जैन चित्रकला में प्रिय विषय रहा। ''भगवान महावीर और उनका तत्व दर्शन'' पुस्तक में बारह भावनाओं का सुन्दर वर्णन एवं चित्रण किया गया है। यदि यहाँ पर उनका वर्णन करेंगे तो विषय वस्तु अत्यंत विस्तृत हो जाएगी । इन्हीं बारह भावना में एक संसार भावना का सुन्दर एवं प्रभावशाली चित्रण सत्रहवीं शताब्दी की काष्ठ पट्टिका पर किया गया है जो कि श्री नीरज जैन, शांति सदन, सतना के संग्रह में है।

जैन संसार-भावना का वैज्ञानिक चित्रण

यह संसार दुःखमय ही है। जैन काव्यों में स्थान-स्थान पर संसार के दुःख स्वरूप का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। बारह भावना में संसार की वास्तविकता को समझने के लिये बारह दृष्टिकोण या समीकरण दिये गये हैं। अनेक जैन कवियों ने संस्कृत और हिन्दी में इन बारह भावनाओं का वर्णन किया है। उन सभी ने संसार का स्वरूप ऐसा ही बताया है कि जगत् में हर प्राणी दुखी है। किसी को एक प्रकार का सुख भी हो, तो भी दूसरी तरह का दुख अवश्य होगा। पण्डित भूधरदास जी ने अपने ग्रन्थ पार्श्व-पुराण में संसार भावना को एक दोहे में प्रस्तुत किया है-

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ।।

एक विशाल वट वृक्ष है जिसकी अनेक जड़ें धरती की ओर लटक रही हैं। वृक्ष पर मधुमक्खियों का एक छत्ता है जिसमें से शहद की बूँदे टपक रही हैं। एक वृद्ध हाथी उस वृक्ष को नष्ट करने के लिये आगे बढ़ रहा है। वृक्ष के नीचे एक गहरा कुआँ है जिसमें फण उठाये हुए जहरीला साँप दिखाई दे रहा है। एक व्यक्ति जो सम्भवतः इस वृक्ष से उस कुँए में गिरा है, वृक्ष की लटकती हुई दो जड़ों को पकड़कर उस गड्डे में लटक रहा है। शहद की टपकती बूँदे उसके मुख में पड़ रही है। ऊपर दो चूहे उन दोनों जड़ों को, जिनके सहारे यह व्यक्ति लटका हुआ है, लगातार काटे जा रहे हैं एक चूहे का रंग काला है और दूसरे का सफेद। उधर वृक्ष के ऊपर एक उड़ता हुआ देव-विमान अंकित किया गया है, जिसमें बैठा हुआ देव इस व्यक्ति की रक्षा करने के लिये हाथ बढ़ा रहा है ।

इस चित्र के द्वारा चित्रकार ने संसार की वास्तविक दुखपूर्ण स्थिति को इन सारे मनोवैज्ञानिक प्रतीकों के माध्यम से इस पट्टिका पर प्रस्तुत किया है। यहाँ वृक्ष ही संसार है । इतने बड़े वृक्ष से टपकती हुई शहद की छोटी छोटी बूँदें सांसारिक सुख का प्रतीक है। वृक्ष को नष्ट करने की कोशिश करता हुआ हाथी काल का रूप है। जिन जड़ों के सहारे वह व्यक्ति लटक रहा है वे जड़ें ही उसकी आयु का प्रतीक है। इन जड़ों को जो निरन्तर काट रहे हैं। उन मूषकों में काला चूहा रात्रि का प्रतीक है और सफेद चूहा दिन का प्रतीक है। इस तरह एक-एक दिन-रात करके मनुष्य की आयु कट रही है। नीचे का गड्ढा वह दुर्गति का कूप है जिसमें भयंकर दुख के साँप बैठे हैं। किसी भी क्षण इस अभागे मनुष्य का पतन उस कूप में हो सकता है क्योंकि आयु की जड़ें कट रही है। उड़ता हुआ देव विमान और उसमें बैठा हुआ देव धर्म का प्रतीक है जो हाथ बढ़ाकर इस व्यक्ति को भयानक भविष्य से ऊपर उठाने के लिये तैयार है, परन्तु उस लटकते हुए व्यक्ति को किसी भी क्षण भव सुख छूट जाने का भय भी उसे धर्म की बाँह पकड़ने से रोके हुए हैं क्योंकि उसकी निगाह उन टपकती हुई शहद की बूँदों पर लगी है और मरण का भय आँखों से ओझल करके भी वह उन बूँदों का स्वाद लेता हुआ अपने आपको सुखी मान रहा है। संसार में यह हर प्राणी की दशा है।

जैन चित्रकला में तीर्थंकर की माता द्वारा देखे गए सोलह-स्वप्नों का सुंदर अंकन किया गया है जो कि प्रतीकात्मक है। स्वप्न मनोविज्ञान से संबंधित तथ्य हैं । किसी स्वप्न अवयव और उसके अनुवाद में जो नियत अर्थात् न बदलने वाला संबंध होता है उसे हम प्रतीकात्मक संबंध कहते हैं और स्वयं स्वप्न अवयव को अचेतन स्वप्न विचार का प्रतीक या संकेत कहते हैं। स्वप्न अवयवों एवं उनके पीछे मौजूद विचारों में

चार संबंध होते हैं-(1) किसी एक भाग का आ जाना (2) अस्पष्ट निर्देश (3) कल्पनाचित्र (4) सांकेतिक या प्रतीकात्मक। इनमें प्रतीकात्मकता स्वप्न सिद्धांत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

मनोविज्ञान में इस तरह विश्लेषण मिलता है कि प्रतीकों के द्वारा कुछ परिस्थितियों में स्वप्न दृष्टा से बिना प्रश्न किये स्वप्न का निर्वचन कर सकते हैं परंतु स्वप्न दृष्टा प्रतीकों के बारे में कुछ नहीं बता सकता है।

अधिकतर पाश्चात्य विद्वान यह मानते हैं कि दबी हुई इच्छाएँ स्वप्न में तृप्त होती हैं । परन्तु एक पश्चिमी दार्शनिक ने मनोवैज्ञानिक कारणों का पता लगाते हुए बतलाया है कि स्वप्न में मानसिक जगत के साथ ही बाह्य जगत का भी संबंध होता है इसीलिये उनसे हमें भविष्य की घटनाओं का भी पता चल जाता है । यही विचारधारा प्राच्य विद्वानों की है जो स्वप्न को ज्ञान की ऐसी परिस्थिति मानते हैं जो बिना किसी प्रयत्न के अनजाने में सुषुप्त दशा में भी व्यक्त होती रहती है, और वे स्वप्न को वर्तमान के साथ-साथ पूर्व जीवन से संबंधित भी मानते हैं। जैन मान्यता के अनुसार स्वप्न संचितकर्मों के अनुसार घटित होने वाले शुभाशुभ फल के द्योतक होते हैं परन्तु अधिकांश स्वप्न अनिद्रा अथवा घोर निद्रा के कारण तथा अन्य कुछ मानसिक और शारीरिक विकारों के कारण भी दिखाई देते हैं। ऐसे स्वप्नों का कोई अर्थ नहीं होता है। जिस व्यक्ति का जितना इन कर्मों का क्षयोपशम होगा उस व्यक्ति के स्वप्नों का फल भी उतना ही अधिक सत्य निकलेगा। तीव्र कर्मों के उदय वाले व्यक्ति के स्वप्न भी निरर्थक होते हैं। फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिक स्वप्न शास्त्रियों ने स्वप्न को भूत, वर्तमान और भविष्य जीवन का द्योतक माना है। पौराणिक आख्यानों से यह पता चलता है कि स्वप्न भावी जीवन में घटने वाली घटनाओं की भी सूचना देते हैं यह तथ्य इस बात से प्रमाणित हो जाता है कि माता पूर्व में ही तीर्थंकर की सारी महानताओं का दर्शन स्वप्नों के माध्यम से कर लेती है। वह सोलह स्वप्न देखती है और अपने पति से उन स्वप्नों का अर्थ पूछती हैं। माता द्वारा देखे गए सोलह स्वप्न व उनके फल इस प्रकार हैं :-

1. श्वेत मदोन्मत गजेन्द्र : तीर्थनाथ पुत्र होगा।
2. चन्द्र समान उज्जवल वृषभ राज : श्रेष्ठ और महान धर्मरूप रथ का प्रर्वतक होगा।
3. कान्तियुक्त, धवल विशाल देह धारक सिंह : कर्म रूपी गज समुदाय का अंत कर अनन्त वीर्यशाली होगा।
4. कमलासन में विराजमान लक्ष्मी : सुमेरु के शिखर पर देवेन्द्रों द्वारा जन्माभिषेक होगा।
5. दो मालाएँ : सुगन्धित देहवाला और सद्धर्मज्ञानरूप तीर्थ का प्रवर्तक होगा।
6. सूर्य : अज्ञानरूपी अंधकार का नाश होगा।
7. चन्द्रमा : श्रेष्ठ धर्म रूप अमृत का बरसाने वाला और ज्ञानियों को आनन्द देने वाला होगा।
8. कलश-युगल : अनेक विधियों का स्वामी और ज्ञान ध्यानरूपी अमृत से परिपूर्ण होगा।
9. मत्स्य-युगल : सर्वसुखों को सम्पन्न करने वाला महासुखी होगा।
10. कमलपराग तैरते हुए जलपूर्ण दिव्य सरोवर : दिव्यलक्षणों और व्यंजनों से शोभित शरीर वाला होगा।

11. उमड़ता समुद्र : केवल ज्ञानी और नव केवललब्धियों वाला होगा।
12. मणिमा उत्तुंग दिव्य सिंहासन : साम्राज्य के योग्य जगद्गुरु होगा।
13. देव विमान - वह स्वर्ग से अवतरित होगा।
14. देदीप्यमान धरणेन्द्र विमान : अवधि ज्ञानरूप नेत्र का धारक होगा।
15. रत्न राशि : सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् चरित्र आदि गुणों का भण्डार होगा।
16. प्रदीप्त निर्धूम अग्नि : कर्मरूप काष्ठ को भस्म करेगा।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र (श्री महावीर जी जयपुर) के महापुराण, ग्रन्थ में माता मरुदेवी द्वारा देखे गए सोलह स्वप्नों का अंकन किया गया है। सन् १४२५ के आदिपुराण (सरयूदोषी संग्रह) के एक चित्र में माता मरुदेवी, नाभिराज के सोलह मंगल स्वप्नों की चर्चा करते हुए चित्रित है। यह मैं पहले बता चुकी हूँ कि मनोवैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि सामान्यतः स्वप्नद्रष्टा देखे हुए प्रतीकों का अर्थ नहीं समझ पाता। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने कलयुग में होने वाली घटनाओं का दर्शन स्वप्न में पहले ही कर लिया था। इससे अधिक इस बात की प्रमाणिकता क्या होगी कि वे सभी तथ्य वर्तमान में घटित हो रहे हैं। उनके द्वारा देखे गए स्वप्नों का चित्रांकन जबलपुर में स्थित जैन पिसनहारी की मढ़िया की एक शिला पर किया गया है। साथ ही उनके फल भी लिखे गए हैं। सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा देखे गए स्वप्न और उनके फल इस प्रकार हैं :-

1. अस्त होता सूर्य - कलियुग में अंगधारी मुनि नहीं होंगे।
2. कल्पवृक्ष की टूटती शाखा - क्षत्रिय राजा जिनेश्वरी दीक्षा नहीं लेंगे।
3. समुद्र द्वारा सीमा का उल्लंघन - शासक अन्यायी होंगे।
4. बारह फण वाला सर्प - बारह वर्षों तक भयंकर अकाल पड़ेगा।
5. देव विमान का वापस लौटना - कलयुग में स्वर्ग के देवगण अवतरित नहीं होंगे।
6. ऊँट पर बैठा राजकुमार - शासक और मंत्रीगण निर्दयी होंगे।
7. दो लड़ते हुए हाथी - समय पर पानी नहीं बरसेगा।
8. दो बछड़े रथ खींचते हुए - कलियुग में साधु धर्म का निर्वाह युवावस्था में ही हो सकेगा।
9. नग्नस्त्रियाँ नाचते हुए - लोग अरिहंत देव को छोड़कर कुदेवों को पूजेंगे।
10. सोने के पात्र में कुत्ते का खीर खाना - कुल की लक्ष्मी नीच कुल में चली जाएगी।
11. जुगनू चमकते हुए - धर्म की प्रभावना कम हो जाएगी।
12. सूखे सरोवर में दक्षिण दिशा की तरफ थोड़ा सा पानी - दक्षिण दिशा में जैन धर्म की वृद्धि होगी।
13. धूल में खिला हुआ कमल - ब्राह्मण और क्षत्रिय जैन धर्म से रहित होंगे, वैश्य लोग जैन धर्म का पालन करेंगे और धनवान होंगे।
14. छिद्र सहित चन्द्रमा - शासन में अनेक भेद हो जायेंगे।

15. हाथी पर बैठा हुआ बन्दर-नीच लोग राज्य करेंगे और क्षत्रिय व ब्राह्मण लोग उनकी सेवा करेंगे।

इन स्वप्नों का अर्थ आचार्य भद्रबाहु से समझने के पश्चात् सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने पुत्र का राज्याभिषेक किया। तत्पश्चात् दिगम्बरी दीक्षा धारण करके भद्रबाहु आचार्य के साथ दक्षिण चले गए।

जैन चित्रकला में गति विज्ञान (डायनिज्म) का सुन्दर प्रयोग त्रिभंग मुद्रा में किया गया है। सन् ११२५ की एक चित्रित काष्ठ-फलक पर संगीत मंडली का अंकन है। इस चित्र में नर्तकी और वादकों के अंकन में अत्यधिक लयात्मकता दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार सित्तन्नवासल जैन गुफा में अप्सरा की नृत्य मुद्रा में भी बहुत गतिशीलता है। इसी प्रकार के प्रायः जैन चित्रों में गति विज्ञान का सुन्दर प्रयोग दिखाई पड़ता है।

संगीत पर आधारित राग-रागिनी का चित्रण प्रारंभ से ही चित्रकारों का प्रिय विषय रहा है। जैन चित्रकला में भी यथास्थान राग-रागिनी का अंकन किया गया है। राग-रागिनी को देवी-देवताओं के रूप में कल्पित किया गया है। उनके शरीर पर सुनिश्चित श्रृंगार, सुनिश्चित आयुध एवं सुनिश्चित वाहन होना चाहिये। मौसम अनुसार भिन्न-भिन्न राग-रागनियाँ, प्रचलित रही हैं।

संगीत में गणितीय प्रमाण तथा सौंदर्य होता है। स्वर ध्वनि विज्ञान के संबंध में तीन गणित मान प्रचलित हैं जिनका वर्णन डॉ. नेमिचन्द शास्त्री ने पुस्तक 'भारतीय संस्कृति में जैन वाङ्मय का अवदान' में दिया है। विद्यानन्द ने गायन, वादन और नर्तन को संगीत का अंग मानते हुए सात स्वर का भी वर्णन दिया है। संगीत शास्त्र की उत्पत्ति जैन दृष्टिकोण से क्रिया विशाल नाम तेरहवें पूर्व से हुई है और इसी में संगीत शास्त्र के विविध सिद्धातों का निरूपण किया गया है। संगीत स्वर और लय के चक्र पर आधारित है और दोनों में संतुलन आवश्यक होता है तभी सौन्दर्य उत्पन्न होता है।

जैन चित्रकला में विवाहोत्सव, तीर्थंकर के जन्मोत्सव आदि का अंकन किया गया है जिसमें संगीत मण्डली के सुन्दर चित्र बनाए गए हैं। प्राचीन काल से ही जैन चित्रकला में संगीत का अंकन किया जाता रहा है, जिसके उदाहरण दूसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व की जोगीमारा की गुफा से लेकर आज तक देखे जा सकते हैं। प्राचीन चित्रों में अप्सराओं का अंकन विशेष महत्व देकर किया जाता था जिनको अनेक सुन्दर मुद्राओं में

नृत्य करते हुए चित्रित किया गया है। जैन चित्रकला में समान्यतः संगीत मण्डली के अंकन में प्राचीन काल से ही गति विज्ञान का प्रयोग किया जाता रहा है।

तीर्थंकर भगवान को निश्चित आसन विशेष चिन्ह आदि में अंकित किया जाता है और उनकी ध्यान मुद्रा होती है। धर्म और शुक्ल ध्यानों के द्वारा अप्रशस्त कर्म प्रकृतियाँ प्रशस्त कर्म प्रकृतियों में संक्रमित हो जाने के कारण योगी रोग मुक्त हो जाते हैं तथा उन्हें ऐसी ऋद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जो न केवल आशी विष एवं दृष्टि विष को निरस्त कर देती है वरन् औषधि ऋद्धि भी सिद्ध हो जाती है, जो दूसरे के रोगों को भी ठीक कर देती है, अतः ध्यान पूर्णतः वैज्ञानिक है। वर्तमान में ध्यान के माध्यम से हृदयाघात, कैंसर आदि रोगों का उपचार किया जा रहा है।

इस प्रकार जैन चित्रकला के आधार पूर्णतः वैज्ञानिक हैं । इन चित्रों में समाज विज्ञान के एक से बढ़कर एक उदाहरण प्राप्त होते हैं जिनमें राजा रानी एवं माता-पुत्र वार्तालाप करते हुए, जन्मोत्सव यात्रा में जाते हुए आदि का सुन्दर अंकन प्रस्तुत किया गया है। इन चित्रों में गणित विज्ञान एवं मनोविज्ञान के साथ ही यथास्थान गति विज्ञान का भी प्रयोग किया गया है। प्रायः सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उनके विशुद्धि रूप परिणामों (भाव) को जैन चित्रकला में प्रस्तुत किया गया है।

भाव विज्ञान सम्पादक मंडल के सदस्य पीएच.डी. उपाधि से विभूषित

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से **संजय जैन,** एडवोकेट, पथरिया, जिला दमोह को डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने फरवरी 2009 में '' जैन दर्शन में कालदृव्य'' विषय पर पीएच.डी. उपाधि प्रदान की ।

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) ने **अजित कुमार जैन** को ''आर्थिक विकास एवं अहिंसात्मक आचार विचार- आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के संदर्भ में विशेष अध्ययन'' विषय पर पीएच.डी. उपाधि से विभूषित किया। आपने यह शोध-प्रबंध डॉ. एन.सी. जैन विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय भोपाल एवं अध्यक्ष, अध्ययन मंडल, वाणिज्य संकाय, के निर्देशन में सम्पन्न किया । यह पीएच.डी भी मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से सम्पन्न हुई है। शोध में अहिंसात्मक आचार-विचार युक्त श्रेष्ठ जीवन शैली पर आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के फलस्वरूप हुए प्रभाव तथा भविष्य में होने वाले प्रभाव की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन में तेज रफ्तार एवं तनावपूर्ण जिन्दगी युक्त दिनचर्या पर हुए प्रभाव, जीवन शैली को प्रबंधित करने के उपाय, व्यवस्थित एवं प्रबंधित जीवन शैली अपनाए जाने के माध्यम से प्राप्त होने वाली उपलब्धियाँ/सफलताएँ एवं उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य के आर्थिक विकास की संभावनाओं एवं समस्याओं के समाधान पाने के विषय का समावेश किया गया है।

इस अवसर पर भाव विज्ञान परिवार डॉ. अजित कुमार जैन एवं डॉ. संजय जैन को बधाई एवं उनके उज्जवल व मंगलमय भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

आर्थिक विकास यदि सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन का माध्यम है तो सामाजिक व्यवहार से भी आर्थिक विकास निर्धारित होते हैं। आर्थिक विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप देश में समस्त साधनों का कुशलपूर्वक प्रयोग एवं विदोहन होता है। राष्ट्रीय स्तर और प्रति व्यक्ति द्वारा आय में निरन्तर एवं दीर्घकालिक वृद्धि होती है। आम जनता के जीवन स्तर जैसे रहन-सहन (अर्थात स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, पोषण व स्वच्छता आदि), क्रयशक्ति क्षमता एवं सामान्य कल्याण का सूचकांक बढ़ता है।

सरकार के द्वारा सन् 1990 के दशक से जहाँ एक और उदारीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत शासकीय नियंत्रणों एवं प्रतिबन्धों को ढील देकर उदार नीतियों का प्रतिपादन किया गया वहीं दूसरी और वैश्वीकरण के अन्तर्गत बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की अनेक औद्योगिकरण परियोजनाओं को भी आरम्भ किया गया है। उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के नाम पर वर्तमान में तकनीक, उपभोक्ताजनित वस्तुएँ एवं जीवन शैली के विभिन्न प्रकार के चुनाव आसानी से सभी को उपलब्ध हो गये हैं। अब प्रत्येक व्यक्ति कुछ भी बनने एवं किसी भी जीवन शैली को चुनने के लिए स्वतंत्र हो गया है। आधुनिक सूचना तकनीक जैसे इन्टरनेट व मीडिया आदि के माध्यम से उत्पादनकर्ता एवं उपभोक्ता दोनों ही बाहरी दुनिया में प्रत्येक संवाद स्थापित करने में स्वतंत्र हो गये है। वर्तमान में ब्रांड को ही फैशन, रुचि और जीवन शैली माना जा रहा है। एडवांस्ड शारीरिक सुख और आराम देने के साधन बढ़ गये है। शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक श्रम बढ़ गया है। साथ ही, आम आदमी की जिन्दगी तेज रफ्तार एवं तनावपूर्ण हो गई है।

भारत के एक खास वर्ग को अलग कर दिया जाए तो अधिसंख्यक परिवारों की प्राथमिक चिन्ता बढ्ते खर्च को पूरा करने की है। भारत इस समय दुनिया का 12 वाँ सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है। ऐसे हर परिवार का बजट चरमरा गया है और इसका कारण केवल महँगाई की बढ़ती रफ्तार नहीं वरन् परम्परागत भारतीय परिवारों की बदलती खर्च प्रवृत्ति है। पिछले सालों में खर्च करने की प्रणाली में क्रांन्तिकारी परिवर्तन आया है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य आवश्यकताओं के अलावा मनोरंजन, फिटनेस सेंटर, बाहर खाने, बेहतर दिखने एवं बेहतर महसूस करने आदि पर अत्याधिक खर्च बढ़ा है। महानगरों के बाद शहरों में वृहद शापिंग माल की शुरूआत हो चुकी है। बच्चों की रुचि ब्राण्ड की डिक्शनरी बनाने एवं याद करने में सर्वोच्च प्राथमिकता पर है। विज्ञापन का गतिविज्ञान नित्य नई-नई ऊंचाईयों को छूने को बेताब हो रहा है। परिवर्तन जीवन शैली के कारण इच्छाओं की पूर्ति नहीं होने से, बढ़ते खर्च तथा कर्ज के बढ़ते बोझ से व्यक्ति के

नकारात्मक चिंतन ने निम्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होने की संभावनाएँ बढ़ा दी हैं :-

1. कार्य की विफलता का भय, अनिश्चय, स्वार्थ, एवं इन्सानियत या नैतिकता का पतन।
2. मन में बैचेनी या छटपटाहट, आलोचना का भय, चिड़चिड़ापन, खोखलापन, संकीर्णता तथा भारी असन्तोष।
3. मानसिक तनाव, उच्च रक्त चाप, मधुमेह एवं हृदय रोग आदि।
4. अहंकार एवं तीव्र क्रोध आदि।
5. अतृप्ति, उदासीनता, दुर्बलता, थकान एवं अकर्मण्यता महसूस होना।
6. विफलता की आशंका (फियर आफ फेल्योर) से काम को टालने की इच्छा होने पर मन में अंतर्द्वंद उत्पन्न होना, साथ ही टालू प्रवृत्ति से आलसी एवं अरूचिकर वस्तुओं के प्रति असहिष्णु हो जाना।
7. चिन्ता एवं विषाद से ग्रसित होना, दुविधा उत्पन्न होने से समय और ऊर्जा दोनों का नष्ट होना।
8. ग्लानि, पश्चाताप अथवा घटिया मानसिकता का भय।
9. मन में निराशा, कटुता, इर्ष्या, नफरत, संघर्ष, तथा अशान्ति; और
10. निरर्थकता, अक्षमता या हीनता, या अकुशलता की उत्पत्ति।

आधुनिक पश्चिम सभ्यता की तुलना पर आधारित जीवन शैली अर्थात अव्यवस्थित रहन-सहन, खान-पान, तथा फैशन को अपनाये जाने से व्यक्ति का खर्च बढ़ गया है। अत्याधुनिक वैभव की चकाचौंध से उत्पन्न आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होने से उत्पन्न हुई नकारात्मक विचारधारा से शरीर के स्वास्थ पर कुप्रभाव पड़ने की संभावनाएँ बढ़ गयी है। जंक एवं फास्ट-फूड के अन्तर्गत कोल्ड ड्रिंक्स, पिज्जा, हॉट डाग, बर्गर, कुकी, केक, कुरकुरे, अंकल चिप्स, नूडिल, मँचूरियन, सैंडविच, पकोड़े, तली चीजें आदि को खाने से खर्च बढ़ने व शारीरिक रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ बढ़ गी हैं। नशा, शेयर/जुआ आदि व्यसनों को करने से शुभ आचारण तथा सद विचारों में सामंजस्य नहीं हो पा रहा है। एडवांस्ड शारीरिक सुख और आराम देने के साधन, निजी सुख-सुविधाओं, तथा मनोरंजन के साधनों को अपनाने में खर्च बढ़ गया है। भोग-विलास, उपहार एवं विलासिता संबंधित अन्य गैर आवश्यक सामग्रियों की खरीदी करने में खर्च गया है। समय-समय पर बाहर खाने की आदत पड़ने से खर्च बढ़ गया है। फिटनेस सेंटर जाने, बेहतर दिखने एवं बेहतर महसूस करने के उपायों को अपनाने में खर्च बढ़ गया है। बेहतर दिखने की चाहत में वर्तमान में सौंदर्य प्रसाधन का कारोबार भारत में लगभग 950 करोड़ रूपये से अधिक का हो गया है।

क्रमशः........

'श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पापलियान' जयपुर में श्री मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव

दिनांक 14 मई से 21 मई 2009 तक सानन्द समारोहपूर्वक साथ सम्पन्न

धर्मनगरी जयपुर के श्रावकों के पुण्याश्रव की श्रृंखला में श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पापलियान में नवनिर्मित वेदियों मे विराजित होने वाले रत्न, स्वर्ण, रजत विम्बों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सन्त शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के शुभाशीर्वाद से उनके प्रभावक शिष्य अध्यात्म योगी मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में ज्ञानवृद्ध प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द जी, ''पुष्प'' टीकमगढ़ (म.प्र.) के निर्देशन में ब्रह्मचारी जयकुमार जी निशान्त द्वारा सभी धार्मिक क्रियायें आगम परम्पराओं द्वारा सम्पन्न हुई। उनके इस कार्य में ब्र. हरीश जी, ब्र. नितिन जी खुरई, पं. मनीष जी टीकमगढ़, ब्र. अखिलेश जी, ब्र. दीपक जी प्रमुख सहयोगी रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति उमेश जैन, भिण्ड, संगीतकार राजीव एण्ड पार्टी, अशोक नगर, साज सज्जा प्रो. झन्नालाल खोड़ी, मूर्ति प्रशस्ति लेखक श्री विमलजैन एवं जैन म्युजिकल ग्रुप, अशोक नगर एवं लार टीकमगढ़ वालों के बैण्ड की भी सभी कार्यक्रमों में सहायक भूमिकाएँ रहीं। प्रतिष्ठा से सम्बन्धित सभी क्रियायें प्रतिष्ठाचार्य जय कुमार जी निशान्त द्वारा पूर्ण धार्मिक विधि विधान पूर्वक सम्पन्न हुईं।

दिनांक 14 मई 2009, गुरूवार को देव आज्ञा, गुरू आज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण के पश्चात् घट यात्रा का एक विशाल जुलूस मंदिर जी से समारोह स्थल चेम्बर भवन प्रांगण, हाथी, घोड़े, बग्गी बैण्ड वाले सहित महिलाओं द्वारा अपने मस्तक पर मंगल कलश लिए हुए जैनधर्म की जयकारे के साथ पहुचीं। जहाँ ध्वजारोहण का कार्य श्री सुरेश कुमार जी, संजय कुमार जी बैराठी एवं परिवार वालों द्वारा सम्पन्न हुआ एवं मण्डप उद्घाटन श्री महेश जी काला द्वारा किया गया। तत्पश्चात् वेदीशुद्धी, नित्यपूजा, नान्दीपूजा व मण्डप प्रतिष्ठा का कार्य हुआ। दीप प्रज्वलन डॉ. पी.सी. जैन द्वारा किया गया तत्पश्चात मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ सायंकाल महाआरती, शास्त्र प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

जिला दमोह (म.प्र.) के निवासी **श्रावक श्रेष्ठी सिंघई श्री भरत कुमार जैन ने (46 वर्ष) श्रीमती क्रांति जैन** के साथ भगवान के माता-पिता बनने का परम सौभाग्य प्राप्त किया है। वे हार्दिक बधाई के पात्र है । श्री भरत कुमार जी ने शाश्वत तीर्थराज सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की 190 वंदना तथा 7 परिक्रमायें विगत 27 वर्षों में सम्पन्न की हैं। वे ऐलक श्री १०५ अर्पणसागरजी महाराज की पिच्छी, 28 दिन का ब्रह्मचर्य व्रत लेकर, सन् 2008 में प्राप्त करने का सौभाग्य ले चुके है। उनकी श्रीमति कांति जैन ने इस पंचकल्याणक के सुअवसर पर अणुवत धारणकर मुनिश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया है।

दिनांक 15 मई 2009, शुक्रवार को गर्भकल्याणक पूर्व की प्रक्रियाएँ पूरी की गईं एवं मुनि श्री का मंगल प्रवचन गर्भ कल्याणक के संदर्भ में हुआ। इसके पश्चात् पागमण्डल विधान पूरा हुआ। दीप प्रज्वलन श्री राजीव जी जैन गाजियाबाद वालों द्वारा किया गया। सायंकाल महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के पश्चात् इन्द्र दरबार लगा, सोलह स्वप्न, नृत्य-गान एवं गर्भ कल्याणक पूर्व की क्रियायें सजीव रूप से प्रस्तुत की गई।

दिनांक 16 मई 2009, शनिवार को गर्भ कल्याणक की क्रियायें सम्पन्न हुईं। मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज का गर्भ कल्याणक के संदर्भ में मंगल प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने भ्रूण हत्या न करने की शपथ दिलाई एवं गर्भ में बच्चे के आने पर हमें अच्छे विचार मन में संजोने चाहिए एवं वर्तमान समय में टी.वी. दूरदर्शन पर बताये जाने वाले अश्लील दृश्यों से गर्भवती माता को दूर रहना चाहिए जिससे तीर्थंकर स्वरूप बालक का जन्म हो सके। सायंकाल महाआरती शास्त्र प्रवचन के पश्चात् महाराज नाभिराय का दरबार मरुदेवी की सेवा व छप्पन कुमारियों द्वारा भेंट आदि की सुन्दर सजीव प्रस्तुति दी गई। माता के सोलह स्वप्नों को चित्रों के रूप में सजीव देखकर सभी भाव-विभोर हो गये। सौधर्म इन्द्र की भूमिका में श्री सतीशजी श्रीमती कल्पना खण्डाका पुत्र श्री देवप्रकाशजी खण्डाका को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दिनांक 17 मई 2009, रविवार को आदि कुमार का जन्म महोत्सव इन्द्राणी द्वारा आदि कुमार को लाना व ऐरावत हाथी द्वारा पाण्डुक शिला की ओर विशाल जुलूस रवाना हुआ जिसमें १००८ अभिषेक कलशों, भारी लवाजमे व बैण्ड बाजों के साथ भारी जनसमुदाय उपस्थित था। भव्य जुलूस शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ वापिस समारोह स्थल पर आया जहाँ स्थित पाण्डुशिला पर भगवान का अभिषेक किया गया। तत्पश्चात् आदिकुमार को माता-पिता को सौंपा गया। मुनि श्री का जन्म कल्याणक पर मंगल प्रवचन हुआ। सायंकाल महाआरती के पश्चात शास्त्र प्रवचन एवं आदिकुमार के पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ। सभी ने पालना झुलाने में सहभागिता निभाई एवं तत्पश्चात बाल क्रीड़ा आदिकुमार के साथ हुई बाल क्रीड़ा की मनोहारी प्रस्तुति प्रदान की गई।

दिनांक 18 मई 2009, सोमवार को तपकल्याणक से सम्बन्धित सभी क्रियायें सम्पन्न हुई। सुबह के सत्र में नित्य नियम पूजा, विधान पूजन व हवन एवं मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज की तपकल्याणक के महत्व पर मंगल प्रवचन हुआ जिसमे उन्होंने विस्तार से तप के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की। दोपहर को महाराज नभिराय का दरबार व राज्याभिषेक हुआ एवं असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या की महत्ता बतलाई गई व उसका कलाकारों द्वारा सजीव प्रदर्शन किया गया। नीलांजना का नृत्य व उसकी आकस्मिक मृत्यु से उत्पन्न वैराग्य की भावना आना एवं अपने सुपुत्रों भरत बाहुबली को राज्य को सौंपने के दृश्य प्रस्तुत किये गये। भरत की भूमिका में श्री सुनील जैन एवं बाहुबली की भूमिका में श्री राजेश जैन को सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् लौकाँतिक देवों द्वारा वैराग्य स्तुति, दीक्षा व वन प्रस्थान की भाव पूर्ण प्रस्तुति प्रदान की गई। सायंकाल महाआरती, शास्त्र प्रवचन के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा स्थापित पाठशालाओं के बच्चों ने भी नाटक प्रस्तुत किये एवं महिला मण्डल, महावीर स्वामी मंदिर की महिलाओं ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

दिनांक 19 मई 2009, मंगलवार के शुभ अवसर पर नित्य नियम पूजा एवं मण्डल विधान पूजा के साथ-साथ प्रतिदिन की भांति मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज का ज्ञानकल्याण के संदर्भ में मंगल प्रवचन हुआ। इसके साथ-साथ मुनिराज आदित्य के प्रथम आहार का कार्यक्रम हुआ जिसे सभी लोगों ने अपनी आंखों से देखा। दोपहर 2 बजे मंत्राराधना, प्राण प्रतिष्ठा, सूरीमंत्र, केवल ज्ञानोत्पत्ति एवं समवशरण रचना रूप भव्य

समवशरण रचाया गया। जिसमें गणधर के रूप में मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज का मंगलमय उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने समसामायिक प्रसंग की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की। सायंकाल महाआरती व प्रवचन के पश्चात दिगम्बर जैन सांस्कृतिक मण्डल, मण्डलेश्वर (म.प्र.) द्वारा ''सत्यपथ की ओर अग्रसर सती अंजना'' नाटक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 20 जून 2009, बुधवार को मोक्षकल्याणक के अंतर्गत भगवान आदिनाथ का कैलाशपर्वत पर दर्शन, निर्वाण प्राप्ति, निर्वाण कल्याणक पूजन व हवन के कार्यक्रम समारोह स्थल पर सम्पन्न हुए। तत्पश्चात् विशाल जुलूस के रूप में श्रीजी की मूर्तियों को अपने मस्तक पर विराजमान किये श्रावकजन बैण्डबाजों व लवाजमे के साथ श्री दिगम्बर जैन मंदिर की पीपलियान पहुँच व भारी उल्लास एवं विधि विधान के साथ जिन बिम्बों को नवीन वेदियों में तुमुल हर्षध्वनी के साथ विराजमान किया। सभी कार्यक्रमों की सानंद निर्विघ्न समाप्ति पर समारोह के प्रमुख समन्वयक, राजस्थान जैन समाज के मंत्री एवं जयपुर संभाग महासभा के अध्यक्ष श्री कमल जैन ने महाराज व संघ के प्रति कृतज्ञता समाज की ओर से ज्ञापित की। विधानाचार्य पं. जयकुमार जी निशान्त एवं सहयोगी पण्डित वर्गों के प्रति सभी सौधर्म एवं इन्द्र इन्द्राणियों के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समारोह के मुख्य संयोजक श्री अजय कुमार पाटोदी एवं श्री धनकुमार लुहाड़िया जिन्होंने अथक परिश्रम कर इस समारोह को यादगार बनाया एवं सभी कार्यकारी संयोजकों एवं सहयोगी सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया। प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री राजकुमार लुहाड़िया एवं मंत्री श्री रमेश जी लुहाड़िया व पदाधिकारियों को सफलता के लिए बधाई देते हुए आभार व्यक्त किया। समारोह मे हुए किसी भी अविनय के लिए श्री रामबाबू जी के द्वारा क्षमा प्रार्थना की गई। तत्पश्चात महाराज श्री ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया एवं संघ की ओर से हुई किसी भी त्रुटि के लिए सभी को क्षमा किया गया।

समारोह में सांसद श्री महेश जोशी, विधायक श्री मोहनलाल गुप्ता, महापौर पंकज जोशी एवं अन्य समाज के गणमान्य महानुभावों एवं संस्थागत प्रतिनिधियों ने अपूर्व उल्लास के साथ सहभागिता निभाई। महायज्ञ नायक श्री रीतेश सौध्या, ईशानइन्द्र नेमीचंदजी पाटौदी, कुबेर इन्द्र श्री राजकुमार लुहाड़िया, यज्ञनायक श्री रमेश लुहाड़िया एवं अन्य विशेष इन्द्रों में समाज के महानुभावों ने भाग लिया। इस समारोह में सारे भारत वर्ष के सुदूर प्रदेशों, कर्नाटक, तमिलनाडू, पांडिचेरी, इन्दौर, भोपाल, दमोह एवं मध्यप्रदेश के अन्य भागों से महाराज श्री के भक्तों ने समारोह में पधारकर शोभा बढ़ाई। कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान करने वाले संयोजकों व सहयोगियों व अन्य महानुभावों का भावभीना स्वागत सम्मान किया गया। मुख्य समन्वयक श्री कमल बाबू जैन का उनके द्वारा दिये गये विशेष सहयोग के लिए अध्यक्ष श्री राजकुमार जी लुहाड़िया व प्रबंध समिति ने माला, शाल एवं साफा व स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका विशेष सम्मान करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर श्री प्रदीप जैन एवं अन्य विशेष महानुभावों का भी सम्मान किया गया। इस पंचकल्याणक में 60 से ज्यादा जिन बिम्ब प्रतिष्ठा हेतु आये जिन्हें सभी लोग यथा स्थान गाजे बाजे के साथ ले गये। इसी दिन रात्रि को सम्मान समारोह के साथ-साथ महिला मण्डल, महामंडलेश्वर की महिला कलाकारों द्वारा नाटक ''चेलनारानी'' प्रस्तुत किया गया जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। कलाकारों का सम्मान भी किया गया। इसी दिन प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार जी निशान्त व उनके सह प्रतिष्ठा सहयोगियों का

भी प्रबंध समिति द्वारा स्वागत सम्मान किया गया।

दिनांक 21 मई 2009, गुरूवार को गाजे-बाजे व हाथी-घोड़ों व पालकियों के साथ एक विशेष जुलूस शहर के बाजारों से गुजरता हुआ श्री जी की पालकी के साथ-साथ एवं मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में श्री दि. जैन मंदिर, पापलियान में पहुंचा जहाँ समारोह पूर्वक समापन किया गया। प्रबंध समिति के अध्यक्ष एवं अन्य महानुभावों ने अपने उद्बोधन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सम्पन्न होने पर सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री पंकज जोशी, पूर्व सांसद श्री महेश जोशी एवं विधायक श्री मोहनलाल गुप्ता ने अपने-अपने कोटे से कुएँ में 18 इंच का बोरिंग करवाये जाने की घोषणा की, जिससे जैन आचार्यों व साधुओं का जयपुर में ज्यादा ज्यादा आगमन संभव हो सके। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के भी शीघ्र ही राजस्थान व जयपुर में आने की भावना व्यक्त की गई। ''आचार्य विद्यासागर प्रभावक मंच''की स्थापना भी की गई जो सतत रूप से आचार्य विद्यासागर जी महाराज को जयपुर लाने का भागीरथ प्रयास करता रहेगा।

अन्त में मुनि श्री ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सभी के सुखमय मंगलमय जीवन की कामना की एवं धर्म गंगा में हमेशा बने रहने व साधु संतों की सेवा करते रहने को सातिशय पुण्यार्जक स्त्रोत बताया जिसे सभी को अपने जीवन में अपनाना चाहिये।

कमलबाबू जैन, *मुख्य समन्वयक पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, जयपुर*

▼▼▼

दि. जैन मंदिर, गायत्री नगर, जयपुर में आदिनाथ भवन का लोकार्पण

दि. जैन मंदिर, महारानी फार्म, गायत्री नगर, जयपुर में 30/5/2009 एवं 31/5/2009 को वेदी शुद्धि, जिनबिम्ब, विराजमान यागमण्डल विधान तथा आदिनाथ भवन का लोकार्पण एवं जिनेन्द्र रथ यात्रा के कार्यक्रम परम पूज्य प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य अध्यात्म योगी मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ऐलक श्री १०५ अर्पणसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में तथा पं. श्री विमलकुमार जी के निर्देशन में सम्पन्न हुए। मदिर की तीनों वेदियों पर स्वर्ण का चित्राम, शिखर के अधोभाग में भव्य चित्रकारी एवं गर्भगृह में चहुँ और चतुविंशति तीर्थंकरों के मनोहारी चित्रों का आकर्षण कार्य पंचकल्याणक की प्रभावना से मन में उमडी उमंग के फलस्वरूप हुआ है।

▼▼▼

दि. जैन मंदिर, मानसरोवर, जयपुर में आदिनाथ भवन का भव्य शिलान्यास

दिनांक 4 जून 2009 को मानसरोवर, जयपुर में श्री आदिनाथ भवन का भव्य शिलान्यास मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज के सान्निध्य में संपन्न हुआ। 20 कमरों के संतभवन के साथ-साथ इस विशालतम भवन में अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित 30 कमरों का बालिका छात्रावास, 100 कमरों का धर्मशाला, 3 बड़े हाल, 2 भोजनशालाओं, चिकित्सा सुविधाएँ होंगी।

भाव विज्ञान पत्रिका

✳✳ परम संरक्षक ✳✳

श्री गौतम काला, राँची

श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, दैहरादून

श्री पदमराज होळल, दावणगेरे

श्री सोहनलाल कासलीवाल, सलेम

श्री संजय जैन, राँची

श्री आकाश टोंग्या, भोपाल

कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर

श्रीमती संगीता बजाज पत्नि श्री हरीश बजाज, टीकमगढ़

✳✳ संरक्षक ✳✳

श्री विजय अजमेरा, रीवा

श्री के सी जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर

✳✳ आजीवन सदस्य ✳✳

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी-दमोह

श्री जिनेन्द्र उस्ताद, दमोह

श्री नरेन्द्र जैन, सबलू दमोह

श्री निर्मल कुमार, इटोरिया

श्री संजय जैन, पथरिया दमोह

श्री अभय कुमार जैन, गुड्डे पथरिया, दमोह

श्री निर्मल जैन इटोरिया, दमोह

श्री राजेश जैन हिनोती, दमोह

श्री चंदूलाल दीपचंद काले, कोपरगाँव

श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले, कोपरगाँव

श्री अशोक चंपालाल ठोले, कोपरगाँव

श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल, कोपरगाँव

श्री चंपालाल दीपचंद ठोले, कोपरगाँव

श्री अशोक पापड़ीवाल, कोपरगाँव

श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल, कोपरगाँव

श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल, कोपरगाँव

श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल, कोपरगाँव

श्री श्रीपाल खुशीलचंद पहाड़े, कोपरगाँव

श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े, कोपरगाँव

श्री प्रेमचंद कुपीवाले, छतरपुर

श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर, छतरपुर

श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स, छतरपुर

श्री महेन्द्र जैन, लघु उद्योग निगम, छतरपुर

श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले, छतरपुर

श्री कमल कुमार जतारावाले, छतरपुर

श्री भागचन्द जैन, छतरपुर

श्री देवेन्द्र डयोढ़िया, छतरपुर

अध्यक्ष, महिला मंडल, डेरा पहाड़ी, छतरपुर

अध्यक्ष, महिला मंडल शहर, छतरपुर

पंडित श्री नेमीचंद जैन, छतरपुर

डॉ. सुरेश बजाज, छतरपुर

श्री विनय कुमार जैन, टीकमगढ़

सिंघई कमलेश कुमार जैन, टीकमगढ़

श्री संतोष कुमार जैन, टीकमगढ़

श्री अनुज कुमार जैन, टीकमगढ़

श्री सी.बी. जैन, मजना वाले, टीकमगढ़

श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले, टीकमगढ़

श्री राजीव बुरवारिया, टीकमगढ़

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

श्रीमती ओमा जैन, लश्कर ग्वालियर

श्रीमती केशरदेवी जैन, लश्कर ग्वालियर

श्रीमती शकुन्तला जैन, लश्कर ग्वालियर

श्री दिनेश चंद जैन, लश्कर ग्वालियर

श्री प्रमोद कुमार जैन, अशोक नगर

श्रीमती सुषमा जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी), लश्कर ग्वालियर
श्रीमती सुप्रभा जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती प्रमिला जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती मिथलेश जैन, लश्कर ग्वालियर
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती मीना जैन, हरीशंकर पुरम, ग्वालियर
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना, ग्वालियर
श्रीमती मीना चौधरी, लश्कर ग्वालियर
श्री निर्मल कुमार चौधरी, लश्कर ग्वालियर
श्री कल्याणमल जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती सूरजदेवी जैन, माद्योगंज, ग्वालियर
श्रीमती उर्मिला जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती विमला देवी जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती विमला जैन, माधोगंज, ग्वालियर
श्रीमती मोती जैन, थाठीपुर, ग्वालियर
श्रीमती अल्पना जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती रोली जैन, थाठीपुर, ग्वालियर
श्रीमती ममता जैन, माधव नगर, ग्वालियर
श्रीमती नीती चौधरी, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती आभा जैन, चेतकपुरी ग्वालियर
श्रीमती सुशीला जैन, ग्वालियर
श्रीमती पुष्पा जैन, लोहिया बाजार, ग्वालियर
श्रीमती अंगूरी जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री ओ.पी. सिंघई, ग्वालियर
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया, ग्वालियर
श्री सुभाष जैन, ग्वालियर
श्री खेमचंद जैन, ग्वालियर
वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया (असम)
श्रीमती सितारादेवी जैन, जबलपुर
श्री सुरेशचंद्र जैन, भिण्ड
श्री महेशचंद जैन पहारिया, भिण्ड
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले, भिण्ड
श्री संजीव जैन 'बल्लू', भिण्ड
श्री महेन्द्र कुमार जैन, भिण्ड
श्री महावीर प्रसाद जैन, भिण्ड
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन, भिण्ड

✶✶ नये सदस्य ✶✶

श्री राजेश जैन (गंगवाल), जयपुर
श्री रिखब कुमार जैन, जयपुर
श्री बाबूलाल जैन, जयपुर
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा, जयपुर
श्री पदम पाटनी, जयपुर
श्री राजीव काला, जयपुर
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन, जयपुर
श्री पवन कुमार जैन, जयपुर
श्री घन कुमार जैन, जयपुर
श्री सतीश जैन, जयपुर
श्री अनिल जैन (पोत्याका), जयपुर
श्रीमती शीला डोइया, जयपुर
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या, जयपुर
श्री हरकचंद लुहाड़िया, जयपुर
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी, जयपुर
श्रीमती साधना गोदिका, जयपुर

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं ....
पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षण 51000/- ☐ परम संरक्षक 21000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ साधारण सदस्य 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।
मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।

हस्ताक्षर

दिनांक :

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को परम संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/साधारण सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक

हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

''जयपुर पंचकल्याण महोत्सव-2009 झलकिया''

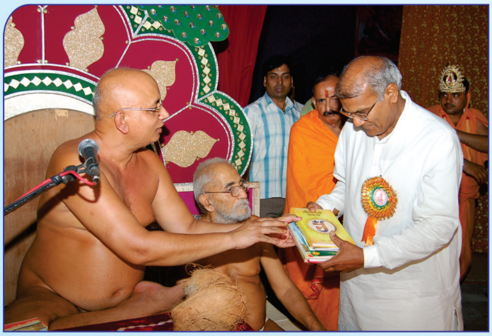

डॉ. शीतलचंद जी जैन प्राचार्य, संस्कृत कालेज, जयपुर मुनिश्री से साहित्य प्राप्त करते हुये।

डॉ. संजय जैन, एडवोकेट, पथरिया (दमोह) का सपरिवार सम्मान करते हुए जयपुर की समाज

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए विशिष्ट अतिथि

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज से आशीर्वाद एवं साहित्य प्राप्त करते हुए डी.एस.पी. श्री अनिल जैन

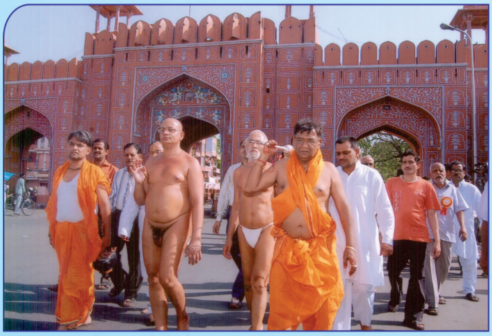

महावीर जयंती के अवसर पर मुनिश्री समारोह स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए।

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के उप कुलपति डॉ. एन.सी. जैन

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत पंचकल्याणक महोत्सव की पत्रिका का विमोचन करते हुए।

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए विशिष्ट अतिथि

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

''जयपुर पंचकल्याण महोत्सव-2009 झलकिया''

मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज समवशरण में
गणधर के रूप में संबोधन देते हुए।

भगवान की दीक्षा संस्कार विधी सम्पन्न करते हुए
मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज।

भगवान की अंक न्यास विधी सम्पन्न करते हुए
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

भगवान के जन्मकल्याणक के अवसर पर
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज एवं श्रावकगण

नवप्रतिष्ठित जिनबिम्बो का अभिषेक करते
हुए श्रावकगण

नव प्रतिष्ठित जिन बिम्बों का दर्शन करते
हुए श्रावकगण

सौजन्य से

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. इन्द्र प्रकाश जी एवं प्राकृत/संस्कृत की ज्ञाता
स्व. सुमतिदेवी जैन की सुयोग्य पुत्री

कु. इन्द्र सेना जैन (बैंक सेवानिवृत्त)

60/76, रजतपथ मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान) फोन : 97855-73307

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)